प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ.. सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

इस दुनिया में किसी के साथ खुद की तुलना मत करो यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप खुद का अपमान कर रहे है।

बिल गेट्स

वर्ष-05, अंक - 51 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 21 सितम्बर 2023 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

नाहटिया का पूरा वंश खत्म, तालाब फूटने से हुई इन मौतों का जवाबदार आखिर कौन...?

ऐसे तालाब जिसकी कोई गारंटी नहीं और इसका मेंटेनेंस खर्च भी नहीं तो क्यों बनाए जाते है ऐसे तालाब जो मौत को बुलावा देते हैं...?

मृतक नाहटिया की तुफान जीप पानी के सैलाब में बह गई।

पक्के मकान का अस्तित्व कुछ इस तरह से बाकी रहा।

पाडाधामंजर का तालाब का वेस्टवेयर बना है ऊपरी हिस्से में।

माही की गूंज, संजय भटेवरा।

हम किसी भी विकास कार्य का विरोध नहीं करते और न ही उन योजनाओं का विरोध करते हैं जो जन हितेषी योजना है। लेकिन ऐसे कार्य और योजनाओं का विरोध व उस पर चिंतन जरूर करना होगा जो कार्य व योजना आमजन की मौतो का कारण बनता है और उन मौतो की जवाबदेही तक किसी की भी नहीं होती है...!

मानसून विभाग द्वारा पूर्वानुमान के साथ बताया गया था कि, बंगाल की खाड़ी से तूफान उठकर 6 से 7 सितंबर से मध्य प्रदेश में बारिश होगी। वहीं दूसरा बंगाल की खाड़ी के तूफान उठने पर 15 से 17 सितंबर तक सतत् तीन दिवसीय बारिश होने का अनुमान मध्य प्रदेश में मानसून विभाग ने बताया था। वही प्रदेश के 13 जिले को हाई अलर्ट भी किया था जिसमें खासकर झाबुआ, अलीराजपुर, बड़वानी, रतलाम आदि थे।

प्रशासन भी कई हदतक अलर्ट भी इन तीन दिवस में रहा। लेकिन उन जलाशयों पर प्रशासन ने अपनी जवाबदेही तय नहीं की जहां के विकास कार्य में किए गए निर्माण की कोई गारंटी नहीं थी। यही एक कारण रहा कि, झाबुआ जिले के थांदला जनपद के राजस्थान सीमा से सटे पाडाधामंजर तालाब के फूटने से 8 मौतो के साथ एक परिवार का पूरा वंश ही प्रशासनिक जवाबदेही तय नहीं होने के चलते बह गया।

15 सितंबर शुक्रवार शाम से तेज बारिश शुरू होकर रविवार रात तक सतत् बारिश तेज वह धीमी हुई। वहीं बारिश शुरू होने के करीब 25 घंटे बाद ही थांदला जनपद के पाडाधामंजर का तालाब शनिवार रात्रि में करीब साढे 9 बजे फूट गया। जिसमें नाहटिया पिता धन्ना डामोर (34), के साथ पत्नी हमूली बाई (30), मां पुन्नीबाई (58), 6 वर्षीय लड़की लक्ष्मी, लड़का दीवान (8), बंटी (2) व एक 4 वर्षीय बेटी के साथ पूरा 7 सदस्यीय वंश इस तालाब के फूट जाने से बह गया। साथ ही एक परिवार की अन्य महिला पनकीबाई पति हकरिया भी बह गई।

तालाब फूटने से उपरोक्त 8 व्यक्तियों के साथ करीब 10 मकान जिनमें तीन से चार पक्के मकान तथा बाकी कच्चे मकान जिनके मकान का अस्तित्व ही बहने के साथ खत्म हो गया। साथ ही नाहटिया की एक तूफान जीप क्रं एमपी 45 बीबी 0264 के साथ सभी मकानों में बंधे मवेशी व बाईक के साथ सभी खाद्यान्न सामग्री बह गई। शासकिय भवन भी बह गये। वहीं करीब 8 किलोमीटर तक की फैसले तालाब के फूटने से नष्ट हो गई। नाहटिया का शव पाड़ाधामंजर के पूल के समीप ही मिला। लक्ष्मी (6) का शव देवीगढ़ पुल के समीप मिला। हुमलीबाई (30) का शव झाबुआ अनास नदी के समीप मिला।

सोमवार को 8 वर्षीय दिवान का शव थांदला के ग्राम घोडा कुंड नदी से मिला। एक बच्चे का शव राजस्थान के टांडी से मिला। मंगलवार को 2 वर्षीय मासुम बंटी का शव पाड़ाधामंजर के समीप झाड़ियो में मिला।

वहीं उक्त बारिश के चलते भगोर के समीप केसरिया नदी में कार में सवार नागपुर निवासी चार में से दो व्यक्ति बह गए थे जिनके शव भी मिल गए। वही दो ने कार से निकलकर अपनी जान बचाई। मेघनगर के पास गुर्जरपाडा पुल पर एक स्कॉर्पियो जीप को तेज बहता पानी में निकलने में बह गई, जिसमें भी एक युवक की मौत हो गई।

पाडाधामंजर की दर्द विदारक घटना के बाद गूंज की पड़ताल

पाडाधामंजर में तालाब फूटने में हुई पूरे परिवार की दर्द विदारक मोतो के बाद गूंज टीम ने पड़ताल की तो सामने आया कि, उक्त फूटा 8 लोगों का हत्यारा तालाब सन 2004-05 में कलेक्टर की मंजूरी के साथ सिंचाई विभाग द्वारा बनाया गया था, जिसके तात्कालिक इंजीनियर नरेंद्रसिंह प्रजापत थे। उक्त तालाब आधी नगदी मजदूरी व आधे मजदूरी का अनाज दिया जाता था जिसमें गेहूं का मूल्य 5 रूपये था।

उक्त तालाब की जवाबदेही के संबंध में कुछ संबंधित अधिकारियों से गूंज की चर्चा हुई तो अपना नाम नहीं छापने की तर्ज पर उक्त घटना में हुई मौतो पर अपनी संवेदनाएं जताते हुए बताया कि, कलेक्टर के माध्यम से विकास कार्य के रूप में जो भी तालाब के निर्माण कार्य शासन की योजना अनुसार मंजूर होते हैं वह तालाब कोई भी विभाग या निर्माण एजेंसी हो उस विभाग या कार्य करने वाली निर्माण एजेंसी की जवाबदेही 5 वर्ष तक की रहती है। वहीं निर्माण कार्य होने के बाद उक्त तालाबों को ग्राम पंचायत के हेंडओवर कर दिया जाता है। लेकिन शासन की ओर से कलेक्टर के माध्यम से मंजूर हुए तालाबों के लिए जिसमें रोजगार गारंटी के तालाब भी होते हैं। उनके मेंटेनेंस या मरम्मत के लिए कोई राशि किसी भी विभाग, एजेंसी या ग्राम पंचायत को नहीं मिलती है। अधिकारियों ने बताया कि, यह सही है की जो भी विभाग, एजेंसी या ग्राम पंचायत, कलेक्टर के माध्यम से मंजूर होने वाले तालाबों का निर्माण करते हैं वह अधिकारी, शासन व प्रशासन की कार्रवाई से बचने के लिए 5 वर्ष के दरमियान तक बारिश के ऐसे समय में पूरी देख-रेख रखते हैं और जहां तक हो सके वहां तक स्वयं के खर्चे से भी संबंधित अधिकारी या पंचायत के जवाबदार तालाब को फूटने से बचाने का प्रयास के साथ बुलडोजर, मशीनों से वेस्ट वेयर की खुदाई के साथ तालाब को फूटने से बचाने का प्रयास करते हैं ताकि इस तरह की कोई अप्रिय घटना से बचा जाकर संबंधित अधिकारियों पर कोई कार्रवाई न हो सके।

मृतको के शव बेहाल स्थिती में मिले जिसे देख हर किसे के रोगटे हो जाते है खड़े।

अधिकारियों ने बताया, 5 वर्ष के बाद यह सही है कि संबंधित विभाग, एजेंसी या ग्राम पंचायत के संबंधित अधिकारी नियम व योजनानुसार अपना पल्ला झाड़ लेते हैं, क्योंकि शासन की ओर से उनके मेंटेनेंस के लिए कोई कार्य योजना नहीं है।

अधिकारी ने अपनी बात बताते हुए यहां तक कहा कि, मनरेगा में जो भी तालाब निर्माण करना होता है वह शासकीय जगह में ही करना होता है। शासकीय जगह भी बहुत है पर उस शासकीय जगह पर कोई न कोई अपना अधिकार बताता है जिन्हें बिना कार्य के अधिकारियों द्वारा निजी रूप से मैनेज कर उनके नाम मजदूरी के रूप में मस्टर में चढाकर उन्हें राशि देते है। वहीं दूसरी ओर जिस काम में कम समय में कार्य करने का टारगेट हो वह कार्य कैसा होगा...? यह हर कोई अंदाजा लगा सकते हैं, कहा। साथ ही अधिकारी कहते हैं शासन- प्रशासन के लिए यह चिंतन की आवश्यकता है कि, बिना मेंटेनेंस वाले ऐसे तालाब के कार्य नहीं करना चाहिए या फिर मेंटेनेंस के लिए प्रतिवर्ष संबंधित अधिकारियों की जवाबदेही के साथ राशि मिलना चाहिए ताकि विपरीत स्थितियों में भी विभागो, एजेंसियों व ग्राम पंचायतो की जवाबदेही तय रहे और पाडाधामंजर जैसी घटनाओं से बचा जा सके।

गूंज की पड़ताल में यह भी सामने आया कि, उक्त तालाब का वेस्ट वेयर निचले हिस्से में न होकर ऊपरी हिस्से में होना बताया जा रहा है। जिससे 25 घंटे हुई बारिश में तालाब, पाल तक ओवर फ्लोर की स्थिति में हो गया। चूँकि उक्त तालाब की जवाबदेही किसी पर भी नहीं होने के चलते तालाब को फूटने से बचाने का प्रयास प्रशासन के नुमाइंदो ने नहीं किया।

गूंज को मिली जानकारी अनुसार स्थानीय प्रशासन ने कोटवाल के माध्यम से तालाब के फूटने के संदेह के साथ दिन में ही तालाब की पाल के नीचे रह रहे लोगों को मकान खाली कर सुरक्षित जगह पर जाने का कहा गया था। इसी कड़ी में अन्य मकान के रहवासी अपना मकान खाली कर चले गए थे और एक-एक परिवार के साथ सभी को सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए परिवार का मुखिया मृतक नाहटिया व उसका एक भाई दोनों मदद कर रहे थे। वहीं जब नाहटीया अपने परिवार को सुरक्षित स्थान पर ले जाने हेतू घर पहुंचा इतने में तालाब की पाल फूट गई और परिवार के साथ पूरा वंश काल के ग्रास में समा गए। वहीं गूंज जानकारी अनुसार नाहटिया का भाई तालाब फूटने की उस स्थिति में महुऐ के वृक्ष पर चढ़ कर अपनी जान बचाई।

गूंज सलाह

गूंज यहां शासन व प्रशासन को यही सलाह देता है कि, बिना मेंटेनेंस वाले व बिना जवाबदेही वाले ऐसे निर्माण कार्य जो मौतो को न्योता दे देने तक भी किसी की जवाबदेही तय नहीं रहती है। ऐसे मौतो को न्योता देने वाले कार्य व भ्रष्टरूपी कार्य नहीं किया जाना चाहिए, जिसका चिंतन अवश्य कर बिना भ्रष्टाचार रूपी व हमेशा के लिए जवाबदेही तय रहने वाले स्थाई व मजबूत कार्य किये जाए, ताकि भविष्य में पाडाधामंजर जैसी घटना की पूर्णावृती ना हो।

यह भी सही है कि, पाडाधामंजर का तालाब, फुटने से हुई मौतो के बाद सुर्खियों में आया। जिसके बाद प्रशासन हरकत में आया और जिले में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा होगा जहां मशीने बुलवाकर कई तालाबों को फूटने से बचाकर अपने भ्रष्टाचार को छुपाया गया है। तथा कई तालाब भी पाडाधामंजर की तरह फूटे भी है लेकिन कोई जनहानि नहीं हुई।

पाड़ाधामंजर का तालाब फुटने के बाद इस तरह से प्रषासन हरकत में आया और जिले में सैकड़ो तालाब को फुटने से बचाकर अपने भ्रष्टाचार को दबाया।

प्रशासनिक जवाबदेही तय नही होने के चलते पाडाधामंजर का यह तालाब फुट कर बना 8 लोगो का हत्यारा।

बिना औपचारिकता के शुरू हुआ 8 लेन एक्सप्रेस वे, देखरेख के अभाव में कहीं जगह क्षतिग्रस्त है बाउंड्री वॉल

माही की गूंज, थांदला।

भारतमाला परियोजना के तहत बना दिल्ली-मुंबई 8लेन एक्सप्रेस वे बिना औपचारिकता व जनप्रतिनिधियों की अनुपस्थिति में रात की 12 बजे 20 सितंबर से शुरू किया गया है। दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस वे के मध्य के हिस्से पर आज असुविधाओं के साथ ट्रैफिक शुरू हो गया। इससे मध्य प्रदेश के झाबुआ के टिमरवानी से निमपुर (मंदसौर) तक 245 किलोमीटर के हिस्से की दूरी महज ढाई घंटे में पूरी होगी। एनएचएआई 8 लाइन के पूरे होने पर समय और ईंधन बचाने का दावा कर रहा है। लेकिन शुरुआत के 6 महीने तक ना तो इस पर पेट्रोल-डीजल मिलेगा और ना ही नाश्ता भोजन। ऐसे में मध्य प्रदेश के इस हिस्से पर आपको यात्रा के दौरान टोल तो पूरा चुकाना ही होगा, लेकिन सुविधा अधूरी ही मिलेगी। वाहन में ईंधन भरपूर रखने के साथ ही नाश्ता और भोजन भी साथ लेकर चलना होगा नहीं तो दिक्कत आ सकती है। 20 सितंबर से अधूरी तैयारी के बीच शुरू हो चुका 8 लेन एक्सप्रेस वे की मिली जानकारी के अनुसार इस रोड का निर्माण 3 महीने पहले पूरा हो चुका है। अभी तक उद्घाटन के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय से समय मिलने का इंतजार किया जा रहा था, लेकिन अब तय किया गया है कि, आवागमन शुरू कर दिया जाए। एक्सप्रेस वे पर टोल, एंट्री और एग्जिट पाइंट पर दिया जा सकेगा।

मध्य प्रदेश के हिस्से में 9 हजार करोड रुपए से अधिक खर्चे से तैयार हुआ मार्ग

वैसे तो दिल्ली-मुम्बई के मध्य उक्त मार्ग की लम्बाई 1380 किलोमीटर है। 245 किलोमीटर का हिस्सा मध्य प्रदेश से गुजर रहा है इसमें रतलाम, झाबुआ, मंदसौर जिले शामिल है। वही यह हिस्सा 9631 करोड रुपए की लागत से बनकर तैयार हुआ है। साथ ही एक निधारित दुरी के साथ हर जगह पर एंट्री पॉइंट बनाए गए हैं।

8 वे का टिमरवानी के पास काम अधूरा

एक्सप्रेस वे मध्य प्रदेश का हिस्सा तो कंप्लीट हो गया है और ट्रैफिक भी शुरू कर दिया गया है। लेकिन टीमरवानी (झाबुआ) के आगे जहां से गुजरात का हिस्सा शुरू होता है उसका काम अभी भी अधूरा है। इसमें बड़ौदा जाने वाले वाहन चालक को फिलहाल तो टिमरवानी तक की 8वे का फायदा मिलेगा इसके बाद अन्य रास्ते से गुजरात जाना होगा। यही स्थिति निमातुर के आगे भी रहेगी इसके आगे कोटा तक के मार्ग पर अभी ट्रैफिक शुरू नहीं हुआ है। इससे पहले दिल्ली से जयपुर के बीच दिल्ली दोसा खण्ड का हिस्सा भी फरवरी में शुरू हो चुका है।

जनजाति कार्य विभाग में चल रही भारी गड़बड़ी, कलेक्टर मेडम जरा रिकार्ड भी खंगाल लो

प्रभारी प्रशासन पर पड़े भारी, अतिथि नियुक्ति में बड़ी गड़बड़ी, नो निहालों का भविष्य किनके भरोसे...?

30 बच्चों को पढ़ा रहे छः शिक्षक और पूरे विद्यालय में सामाजिक अध्ययन विषय के आठ शिक्षक

माही की गूंज, पेटलावद।
राकेश गेहलोत

प्रदेश के साथ ही झाबुआ जिले और ख़ासकर पेटलावद की सरकारी स्कूलों में पढ़ाई एक बड़ी चुनौती है। एक आंकड़े के मुताबिक प्रदेश के लगभग आठ स्कूल ऐसे हैं, जहां सिर्फ एक शिक्षक हैं। वहीं ढाई हजार से अधिक स्कूलों में बच्चे एक अद्द्त शिक्षक को तरस हैं। अगर आपकी सेटिंग बढ़िया हो और जिला प्रशासन पंगु तो भी आप कुछ भी कर सकते हो। यहां सीएम राइज स्कूल, मॉडल स्कूल, एक्सीलेंस स्कूल, एजुकेशन फॉर ऑल जैसे उत्कृष्टता के प्रयोग भी कमतर साबित हो रहे है। ऐसे में सवाल उठता है कि, आखिर बच्चे किसके भरोसे स्कूल जाएं। अगर ये स्कूल जाते भी हैं तो इन्हें पढ़ाएगा कौन...? यह स्थिति भी तब है, जब सरकारी दावों के हिसाब से 50 हजार शिक्षकों की भर्ती हो चुकी है। सरकारी स्कूलों में शिक्षकों की संख्या के हिसाब से भोपाल, इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर सहित अन्य बड़े शहरों की स्थिति भी खराब है। सबसे खराब स्थिति झाबुआ जिले की है। यहां बिना शिक्षक और एक शिक्षक वाले स्कूलों की संख्या सबसे ज्यादा है। इस हिसाब से जिले के पेटलावद की और स्थिति भी दयनीय है। पेटलावद में प्रभारियों के भरोसे चल रही, जो इन स्कूल की पोल खोलने के लिए काफ़ी है। ऊपर से अतिथि भर्ती में हेराफेरी, यहां अतिथि शिक्षकों की भर्ती में बड़ी भूमिका प्रभारियों की रही हैं। नियुक्ति मे परिवारवाद को नियुक्ति देने के आरोप लगते आए हैं और उसकी पोल भी सूचना अधिकार के माध्यम से बाहर आई है। साथ ही ग्रामीण इलाकों के सेटिंग बाज शिक्षको ने सेटिंग बिठाकर जमे हुए हैं कहीं अटैचमेंट के नाम पर तो कहीं प्रतिनियुक्ति के नाम पर, उदाहरण के तौर पर ही हम ले तो सबसे पहले नाम आता है मॉडल स्कूल पेटलावद का जहां पर जनजाति विभाग के कर्मचारी कुण्डली मार कर अंगद के पैर के माफिक जमे हुए हैं और मजे की बात तो यह है जिन पदो पर ये जमे हुए हैं वो पद पोर्टल पर हैं ही नहीं। मॉडल स्कूलों में हायर सेकेंडरी में वर्ग एक के पद होते हैं उन पदो पर नए शिक्षक आ चुके हैं और बाकि बचे पदो पर भी चहेतों को अतिथि के पदो को भर दिया गया है। कहने को तो जिला कलेक्टर लगातार स्कूलों के दौरे पर रहती है लेकिन सरकारी रेकॉर्ड और व्यवस्था को शायद देखना नही चाहती या फिर स्थानीय अधिकारी कलेक्टर को आसानी से गुमराह कर देते हैं।

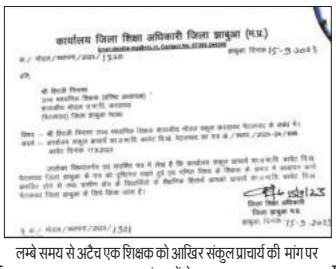

लम्बे समय से अटैच एक शिक्षक को आखिर संकुल प्राचार्य की मांग पर मूल संस्था में भेजा।

30 से 40 बच्चों पर 6 शिक्षक

मिडिल स्कूल में मात्र 30 से 40 बच्चे दर्ज हैं और उन्हें लगभग 6 शिक्षक पढ़ा रहे हैं। मिडिल में मात्र दो पद पोर्टल पर शो हो रहे थे। उनमें से गणित पर नियमित शिक्षक की नियुक्ति हो चुकीं हैं और पद भी भर चुका है। वहीं दुसरा पद अंग्रेजी का हैं उसे भी सेटिंग से प्रभारी ने अपने रिश्तेदार को भौतिकी के नाम पर भर दिया गया है। जबकि मिडिल में इस प्रकार का कोई पद होता ही नहीं। तीसरा पद सामाजिक अध्ययन का हैं परंतु कम छात्र होने से वो पद पोर्टल पर दिखाई नहीं देता है इसलिए उसे भरा नहीं जा सका। लगभग तीन से चार शिक्षक विगत पांच वर्षो से उन पदो पर जमे हैं जो पद हैं ही नहीं, याने शिक्षक याने वर्ग दो के पद हैं ही नहीं। ये शिक्षक जनजाति विभाग के हैं और इनका वेतन भी जनजाति कार्य विभाग से इनकी पदस्त ग्रामीण संस्था से निकल रही हैं, आखि़रि विभाग के जिम्मेदारों को ये दिखाई क्यों नहीं दे रहा है। इन्हे इनके मूल संस्था मे क्यों नहीं भेजा जा रहा जबकि यहां इनकी जरूरत भी नहीं है और ना ही इनके पद। इसी स्कूल के गणित के वरिष्ट अध्यापक को बरवेट मूल संस्था मे प्राचार्य की मांग पर भेज दिया गया है जिससे यहां गणित का पद रिक्त हो गया है और बच्चो की पढ़ाई पर नियमित शिक्षक के चले जाने से प्रतिकुल प्रभाव पढ़ रहा है। वहीं जनजाति विभाग के बाकि शिक्षक यहां पद ना होने के बावजूद जमे पड़े हैं। इस विद्यालय में सामाजिक अध्ययन विषय पर कूल आठ शिक्षक कार्यरत हैं।

स्कूलों के दौरों पर हरा-हरा देख कर निकल जाती है जिला कलेक्टर, फाइल फोटो।

कलेक्टर की ये कैसी जांच जिंसमे लापरवाही कभी सामने नही आई, फाइल फोटो।

अतिथि भर्ती की जांच जरूरी, सरकारी नोकरी की चाह में अपने रिश्तेदारों की भर्ती

अतिथि शिक्षकों के सरकारी नियुक्ति की उम्मीद के चलते लगातार ऐसा देखा जा रहा है कि, संस्था प्रभारी अपनी करीबियों और रिश्तेदारो को भर्ती किया जा रहा है, जिसके लिए नियम कानूनों को ताक में रखा जाता है। जनजाति विभाग के जमे पड़े शिक्षको मे भी कुछ ने प्रभारी प्राचार्य पर दबाव बनाकर अपनें रिश्तेदारों को उपकृत करवाकर अतिथि पदो पर नियुक्ति दिलवा दी वो भी प्रोसिडिंग में गोलमाल कर याने कद्दू कटेगा तो सब मे बटेगा। अगर जांच होती हैं तो बड़ा फर्जीवाड़ा सामने आयेगा।

वही अगर सीएमराइज स्कूल की बात करे तो यहां के प्राचार्य तो अपनें निर्णयों से प्रसिद्ध है। उन्होंने तो दूसरी स्कूलों की शिक्षा व्यवस्था बिगाड़ कर अटैच मेंट प्रथा प्रारंभ की हैं जबकि पूरे प्रदेश में इस प्रकार की व्यवस्था पर पाबंदी है। वही अतिथि शिक्षकों की नियुक्ति मे भी एक अभ्यर्थी बाली भारद्वाज ने आरोप लगाया है कि, ले देकर सेटिंग जमा कर मेरा नाम ही गायब कर दिया गया साथ ही मेरी जगह नलिनी शुक्ला को नियुक्ति दी गई। उसके दस्तावेजों की जांच किए बगैर नियुक्ति दे दी गई, शिकायत के बाद भी कोई कार्यवाही नहीं की गई। जबकि उस व्यक्ति द्वारा फर्जी तरीके से एक तरफ नियमित अतिथि के रूप में नौकरी की और दूसरी तरफ पचास किलो मीटर दूर नियमित बीएड की डिग्री हासिल कर ली जो दोनों एक साथ होना सम्भव नहीं है। इसी प्रकार का फर्जीवाड़ा एकलव्य स्कूल पेटलावद में पूर्व प्रभारी द्वारा फर्जीवाड़ा कर, ले देकर कुछ अतिथियों की नियुक्ति की थी। गड़बड़ी का खुलासा सूचना अधिकार में निकली जानकारी मे हुआ था। पेटलावद विकास खण्ड की इन बड़ी स्कूलों में अतिथि भर्ती में गड़बड़ी सामने आने और शिकायत के बाद भी कोई कार्यवाही ना होना बताता है कि, पूरी व्यवस्था में दीमक लग चुकी हैं।

जय अंबे पदयात्रा के लिए 15 को हुआ जत्था रवाना

माही की गूंज, काकनवानी।

जय अंबे पदयात्रा संघ काकनवानी द्वारा विगत 10 वर्षों से गुजरात अंबाजी धाम दर्शन के लिए जा रहे हैं। इस पदयात्रा में प्रतिवर्ष यात्रियों की बढ़ोतरी होती जा रही है यह यात्रा 8 यात्रियों से शुरू की गई थी जो कि, इस वर्ष 100 पद यात्री हो गए। यह पदयात्रा 15 सितंबर को काकनवानी से रवाना हुआ है जो की 24 सितंबर को गुजरात अंबाजी चामुंडा तिथि गृह में रात्रि विश्राम रहेगा एवं दूसरे दिन 25 सितंबर को ध्वजा चढ़ाने के साथ ही माता जी के दर्शन करेंगे, दर्शन के पश्चात महाप्रसादी भोजन का आयोजन रहेगा।

इस बीच 22 सितंबर को खेड ब्रह्मा अंबाजी के दर्शन कर ध्वजा चढ़ाकर आरती की जावेगी। इस पूरी यात्रा में सुबह-शाम भक्ति एवं हनुमान चालीसा पाठ कर भजन कीर्तन किया जाता है। इस पदयात्रा में काकनवानी गांव सहित हरीनगर, छापरी, बावड़ी एंव ग्रामीण क्षेत्र के कई भक्त लोग शामिल हैं। इस जय अंबे पदयात्रा संघ में बिना किसी भेदभाव के सभी यात्री एक साथ चाय-नाश्ता व भोजन सामूहिक रूप से मिलकर करते है।

पदयात्रा डाडम चंद्र राठौर की अध्यक्षता में प्रतिवर्ष निकाली जाती है। इस जय अंबे पूजा का सॉन्ग की समिति में अल्केश पांचाल, नरेश अमृतलाल पांचाल,,प्रवीण सोनी, नवनीत पांचाल, ललित भानपुरिया, कान्हा वर्मा, नरेश गणपत पांचाल, पंकज पांचाल, संजय बैरागी एवं यात्रा व्यवस्थापक संतोष पांचाल सहित गांव के समस्त समाज के नवयुवक का सहयोग प्रतिवर्ष बना रहता है।

आजादी का अमृत महोत्सव समापन के अवसर पर, मेरी माटी मेरा देश अभियान का किया शुभारंभ

माही की गूंज, सारंगी। मेरी माटी मेरा देश अभियान के तहत ग्राम पंचायत भवन पर अभियान शुरू किया गया। अमृत काल के पंच पत्र विकसित भारत का लक्ष्य, गुलामी के हर अंश से मुक्ति, अपनी विरासत पर गर्व, एकता और एकजूटता, नागरिको मैं कर्तव्यों की भावना का वाचन करते हुए सरपंच, पंच, सचिव एवं गांव के नागरिकों ने शपथ लेते हुए कहा मैंने शपथ ली की भारत को विकसित देश बनाएंगे, गुलामी की मानसिकता को जड़ से निकाल कर फेंकेंगे, देश की समृद्ध विरासत पर गर्व करेंगे, एकता व एक जुटता के लिए कर्तव्य बध रहेंगे, देश की रक्षा करने वालों का सम्मान करेंगे, भारत को 2047 में विकसित बनाने का सपना साकार करेंगे हम सभी यह आज शपथ ले रहे हैं। इस कार्यक्रम में ग्राम पंचायत सरपंच, सभी पंच, सचिव एवं गांव नागरिक के उपस्थित थे।

सट्टा लिखतें सट्टोरिये को किया गिरफ्तार

माही की गूंज, पेटलावद।

बुधवार को थाना प्रभारी पेटलावद को मुखबीर द्वारा सूचना मिली कि, रूपगढ रोड पशु चिकित्सालय के सामने एक व्यक्ति अवैध रूप से सट्टा लिख रखा है, मुखबीर की सूचना पर थाना पेटलावद द्वारा अपनी पुलिस टीम के साथ पहुचंकर दबीश दी गई। जिसमें आरोपी गोकुल पिता महेश प्रजापत निवासी राम मोहल्ला पेटलावद को पकडा गया, जिसके पास से सट्टा लिखी अंक वाली पर्चीया व नगदी 7हजार 890रूपयें जप्त किये गये व प्रकरण दर्ज किया गया।

नवीन कांग्रेस कार्यालय का उद्घाटन, जनआक्रोश रैली को लेकर बैठक आयोजित

माही की गूंज, थांदला।

कांग्रेस कमेटी द्वारा नवीन कार्यालय भवन का उद्घाटन किया गया। बदनावर-लिमडी बायपास रोड पर स्थित नवीन कार्यालय भवन का शुभारंभ क्षेत्रीय विधायक विरसिंग भूरिया द्वारा फीता काटकर किया गया। तत्पश्चात् जन आक्रोश रैली को लेकर बैठक भी आयोजित की गई। बैठक को सम्बोधित करते हुए विधायक विरसिंग भूरिया ने कहा कि, कांग्रेस पार्टी द्वारा जो जन आक्रोश यात्रा निकाली जा रही है व सरकार से त्रस्त आमजन के हितों के लिए ये यात्रा निकाली जा रही है। सरकार की नाकामियों के कारण हर वर्ग, समाज अपने को ठगा महसूस कर रहा है। सम्पूर्ण क्षेत्रवासियों को इस यात्रा के उद्देश्य से अवगत कराना है। प्रदेश सरकार के दिन लद गए हैं अब कुछ ही महीने के लिए यह भ्रष्ट सरकार रह गई हैं।

कार्यक्रम को कांग्रेस जिलाध्यक्ष प्रकाश रांका ने संबोधित करते हुए कहा कि, जनता कांग्रेस पार्टी की ओर अपना भविष्य देख रही है। कांग्रेस कार्यकर्ताओ की कड़ी मेहनत आगामी चुनाव में रंग लाएगी। जिलाध्यक्ष द्वारा यात्रा को लेकर आवश्यक जानकारी कांग्रेस कार्यकर्ताओ को दी गई।

बैठक को ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष गेंदाल डामोर, जिला संगठन मंत्री जसवंत भाबोर, जिला कांग्रेस उपाध्यक्ष नवलसिंग नायक, पूर्व जनपद अध्यक्ष चेनसिंग डामोर, किसान कांग्रेस जिलाध्यक्ष नंदलाल मैडा, पूर्व मंडी अध्यक्ष फतेसिंग नायक, कालूसिंग नलवाला, पूर्व ब्लाक अध्यक्ष पारसिंग डिंडोर, जिला कांग्रेस प्रवक्ता अलीअसगर बोहरा, युवा नेता अरुण ओहारी, अक्षय भट्ट, कमलेश पटेल आदि ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर पूर्व पार्षद व नगर अध्यक्ष आनंद चौहान, सुधीर भाबोर, संदीप डामोर, कादर शेख़, अलीअसगर पटवारी, शहर युवां अध्यक्ष विरेन्द्र बारिया, उपाध्यक्ष रितेश भाबोर, माईनुद्दीन खॉन, हरिश पंचाल, मसूल भूरिया, बहादुर हटीला, रूसमाल मैंड़ा, प्रताप डामोर, उदयसिंग डामोर, मल्ला भूरिया, कालू भूरिया, महेन्द्र लाला नागर, दिनेश डामोर, जयसिंह वसुनिया, रमेश अड़, दीपक बिलावल, शंकर डामोर, मीठूसिंह गणावा, हवा खड़िया, हर्ष भट्ट, जितेन्द्र धामन, श्याम मोरिया, अशोक मोरिया, राळू वसुनिया आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मेघनगर ब्लॉक अध्यक्ष यामिनी शेख ने व आभार कांग्रेस प्रवक्ता विकास रावत ने माना।

धूमधाम से शुभ मुहूर्त में विधि विधान से घर-घर बिराजे विघ्नहर्ता

माही की गूंज, सारंगी।

गणेश चतुर्थी के पावन पर्व के चलते पूरे ग्राम में, मोहल्ला में पंडालों का निर्माण भी हो चुका है। वही घर-घर और पंडालों में विघ्नहर्ता गणेश जी विराजे हैं। ग्राम में धार्मिक माहौल बना हुआ है गणेश चतुर्थी का पर्व दस दिवसीय होने के साथ ही यह उत्साह और उमंग का पर्व है। मूर्ति स्थापना से पहले पूरे ग्राम में विघ्नहर्ता गणेश जी की शोभा यात्रा निकाली गई। करीब 15 जगह एवं हर घर पर मूर्ति स्थापना हुई है। शोभा यात्रा का पूरे ग्राम में गुलाल पुष्प उडाकर विघ्नहर्ता का स्वागत किया गया। इस शोभायात्रा में गांव के नागरिकों के अलावा बच्चों में काफी उत्साह देखा गया। शोभा यात्रा के बाद विघ्नहर्ता गणेश जी की मूर्ति अपने-अपने पंडालों में ले जाकर शुभ मुहूर्त में पंडित जी ने मंत्रो चार के साथ स्थापना करवाई।

इस बार ग्राम के सदर बाजार, रतलाम रोड इमली चौक, गायत्री माता मंदिर, अंबे माता मंदिर, भैरवनाथ बस स्टैंड, बस स्टैंड माताजी मंदिर, पाटीदार मोहल्ला, शंकर मंदिर सहित पूरे ग्राम में घर-घर गणेश जी की मूर्ति की स्थापना की गई।

निजी जमीन की रजिस्ट्री की आड़ में प्लाट काटने के मामले में कलेक्टर झाबुआ ने शासन के पक्ष में दिया निर्णय

रिकॉर्ड में हेरा-फेरी करने वाले आखिर कब बनाये जायेगे आरोपी, अतिक्रमण हटाने के लिए प्रशासन की जेसीबी का इंतजार

माही की गूंज, पेटलावद/बामनिया।

पेटलावद तहसील की सबसे बड़ी ग्राम पंचायत बामनिया तत्कालीन समय से ही झाबुआ विरासत के समय से रेलवे स्टेशन होने के कारण औद्योगिक क्षेत्र के नाम से जाना जाता था। तत्कालीन समय अंग्रेजों के शासन काल में वर्ष 1931-32 में सेटलमेंट बंदोबस्त होने के बाद से मध्यप्रदेश भू-राजस्व अधिनियम 1959 लागू होने के बाद ग्राम बामनिया मे तत्कालीन वर्ष 1973-74 में एक ही बार पेटलावद तहसील की ग्राम बामनिया का सेटलमेंट बंदोबस्त किया गया। जिसके बाद से आज दिनांक तक किसी भी प्रकार से राजस्व भूमि आबादी नजूल भूमि का सेटलमेंट नहीं हुआ है लेकिन राजस्व रिकॉर्ड में लगातार 1973-74 के बाद से आज दिनांक तक भू-माफिया और अधिकारियों की मिलीभगत से संबंधित गोचर भूमि, चारागाह भूमि एवं अन्य राज्य शासन की भूमि के नंबरों को बदलकर राजस्व की बेश कीमती भूमियों को प्लाट काटकर बेचा जा रहा है। ऐसे ही एक निर्णय में कलेक्टर झाबुआ ने न्यायालय में फैसला सुनाते हुए भू-माफियाओं को बड़ा झटका दिया है।

क्या है न्यायालय का मामला

दरअसल दिसंबर 2022 में ग्राम बामनिया की सर्वे नंबर 104,105,106 और 107 की शिकायत हुई थी। जिसमें निजी भूमि सर्वे नंबर 106 की आड़ में सरकारी भूमि 107 पर ?प्लाट काट? कर बेचा जा रहा था। शिकायत के? बाद राजस्व विभाग के अनुविभागीय अधिकारी और तहसीलदार पेटलावद द्वारा उचित कार्रवाई करते हुए तीन लोगों पर राजस्व अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज किया गया था। जिसमें नाथू कटारा द्वारा कलेक्टर न्यायालय झाबुआ मे व्यक्तिगत भूमि को लेकर प्रकरण दर्ज करवाया गया था।

कलेक्टर कोर्ट ने सारे दलीले की खारिज

नाथू कटारा द्वारा सरकारी जमीन हथियाने के मामले में कलेक्टर तन्वी हुड्डा ने नाथू कटरा के अभिवक्ता की सारे पक्ष को गंभीरता से सुना तथा अति गंभीर प्रकरण में न्यायालय द्वारा तहसीलदार को आदेश जारी कर उक्त सर्वे नंबर 107 और 106 की समस्त खसरा खाता वर्ष 1959-60 से लेकर लगातार वर्तमान वर्ष 2022-23 तक की मंगवाई गई और तहसीलदार द्वारा मौका स्थल पर बनाए गए पंचनामा प्रकरण और समस्त प्रोसीडिंग दस्तावेज भी बुलवाए गए। जिसमें स्पष्ट हुआ कि, निजी नंबर 106 की आड़ में 107 सरकारी नंबर की भूमि पर नाथू द्वारा प्लाट काट दिए गए हैं। प्रकरण को सुनने के बाद शासन के पक्ष में निर्णय लेते हुए नाथू कटारा द्वारा दी गई दलील को खारिज कर दिया गया।

राजस्व प्रकरण में बाकी पड़ी भूमि का सीमांकन तथा कार्रवाई बाकी

ग्राम बामनिया रतलाम रोड स्थित सर्वे नंबर 107 का सीमांकन तो राजस्व विभाग द्वारा आधा-अधूरा कर दिया गया है। लेकिन इसी सर्वे नंबर पर भु-माफिया द्वारा निजी नंबर की आड़ में कई प्लाट काट दिए गए हैं। जिसकी जांच भी बाकी है और सर्वे नंबर 105 जिसका रकबा राजस्व रिकॉर्ड में काफी बड़ा होकर के राजस्व के अधीन में आता है उसे पर भी माफिया ने प्लाटिंग कर दी है। देखना है राजस्व विभाग इन सर्वे नंबरों का कब सीमांकन करता है और कब कार्रवाई करता है।

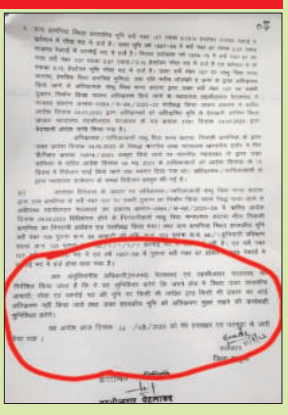

हेरा-फेरी करने वालो के विरुद्ध कही कोई कार्रवाई का उल्लेख नही, प्रशासन की जेसीबी आखिर कब इंतजार...?

बामनिया में सरकारी भूमि को निजी बताकर हत्याने में अकेले भूमि स्वामी ही बल्कि राजस्व रेकॉर्ड में हेराफेरी करने वाले भी जिम्मेदार होते है। लेकिन सरकारी भूमि के रिकॉर्ड में हेरफेर करने से लेकर खरीद-फरोख्त करने वालो पर किसी प्रकार से कार्रवाई नही की जाती है। वही सरकारी भूमि पर अतिक्रमण साबित ओर हटाने के आदेश होने के बाद भी अतिक्रमण हटाने की प्रक्रिया नही की जाती और अतिक्रमण की फाइलें एक न्यायालय से दूसरे न्यायालय तक चलती रहती है। सरकारी भूमियो को हेराफेरी कर कब्जा करने वाले मामले में लोगो अब प्रशासन की जेसीबी और बाकी बची भूमि के सीमांकन के साथ-साथ भूमि की खरीद फरोख्त करने वाले क्रेता-विक्रेता और सरकारी कर्मचारियों, अधिकारीयो पर कानूनी डंडा चलने का इंतजार है।

सुस्त पुलिस के हत्थे अब तक नहीं चढ़े बलात्कारी गेंग के आरोपी, अवैध शराब मामले में भी आरोपी तक तय नहीं

महिला के जेवर लेकर फरार हुए आरोपियों का भी अब तक अता -पता नहीं, आदिवासी संगठनों सहित विपक्ष के नेता भी मौन

माही की गूंज, पेटलावद।

शांति समिति की बैठक के माध्यम से क्षेत्र में शांति बनाए रखने के लिए पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर प्रयास कर रही है। लेकिन जो अपराध घट चुके हैं या जो वारदात हो चुकी हैं उन पर पुलिस का ध्यान नही है। पिछले माह नगर को शर्मसार कर देने वाली एक बड़ी घटना का खुलासा पेटलावद थाने पर हुआ। जिंसमे आदिवासी युवती को बेचने और उससे वेश्यावृत्ति करवाने के साथ बलात्कार होने का मामला उजागर होने के बाद 4 महिलाओं सहित 7 लोगो के विरुद्ध गंभीर धाराओं मामला दर्ज हुआ था। पेटलावद थाना क्षेत्र में घटित गंम्भीर अपराध को लेकर कोई खास हलचल नही देखी गई और प्रकरण के लगभग 25 दिन बीत जाने के बाद पुलिस को इस मामले में एक मात्र सफलता में केवल एक महिला आरोपी को पकड़ा है बाकी 6 आरोपी आज भी फरार चल रहे हैं।

आखिर अवैध शराब का आरोपी कौन, एक माह बाद भी पुष्टि नहीं, जेवर लेकर फरार आरोपियों की भी कोई जानकारी नहीं

एक माह पूर्व ही थाना पेटलावद के अंतर्गत नगर के कानवन रोड से पुलिस ने 60 पेटी अवैध शराब भरी कार पकड़ी थी और आरोपी मौके से फरार हो गए थे। पुलिस ने थाने पर प्रेस कॉन्फ्रेंस रखकर अपनी पीठ थपथपा ली। लेकिन एक माह बाद भी पुलिस इस मामले में आरोपी को पकड़ना तो दूर आरोपी तक तय नही कर पाई। वाहन किसका था और शराब कहा से कहा ले जाई जा रही थी इसका भी कोई खुलासा पुलिस ने अब तक नही किया। थाना प्रभारी राजूसिंह बघेल ने बताया कि, इस मामले में जो भी आरोपी होगा उसे पकड़ा जाएगा और जांच अधिकारी को हटाकर दूसरा जांच अधिकारी नियुक्ति किया है। पुलिस की कार्यप्रणाली कितनी ढीली है इससे ही पता लग रहा है कि, वाहन मालिक की पुष्टि यातायात विभाग से अभी तक नही कर पाए जिसके आधार पर ही आरोपियों की पहचान हो सकेगी। पकड़ी गई अवैध शराब कहा से लाई गई थी इसकी जानकारी भी उसके बेच नम्बर से की जानी है जिसके लिए भी पुलिस और आबकारी विभाग के बीच कोई पत्र व्यवहार नही हुआ है। नगर के बीच बाजार से अज्ञात आरोपी ने एक महिला पर नशीला पाउडर उड़ाकर जेवर लेकर फरार हो गए थे। आरोपी सीसीटीवी में कैद भी हुए लेकिन पुलिस न तो इनकी पहचान कर पाई न ही इन तक पहुँच पाई है।

अवैध शराब में जप्त कार मालिक और आरोपी का कोई अता पता नही।

बलात्कार जैसे घटनाओं पर प्रदेश में चल रहे बुलडोजर यहां आरोपियों के ही पते नहीं

बलात्कार जैसे गम्भीर अपराधों पर सरकार हाथों-हाथ कार्यवाही करने में लगी हुई है। प्रदेश के कई हिस्सों से ऐसी वारदातों में आरोपियों के घर बुलडोजर चलते दिखाये गए लेकिन पेटलावद थाने में दर्ज वारदात में ऐसी कोई कार्रवाई पुलिस की ओर से देखने को नही मिली। जबकी यहां युवती के साथ बलात्कार ही नही बल्कि उसे बेचा तक गया और वेश्यावृत्ति के साथ-साथ, अवैध वसूली के लिए उपयोग किया गया। मामला अत्यंत गंभीर होने के बाद भी प्रदेश की भाजपा सरकार की ओर से कोई बड़ी कार्यवाही देखने को नही मिली। उसीका नतीजा है स्थानीय पुलिस ने मामले को अन्य अपराधो के साथ इस अपराध को साधारण मान लिया और केवल एक गिरफ्तारी की गई। थाना प्रभारी राजू सिंह बघेल ने इस मामले में जल्द सभी आरोपियों को पकड़ने की बात दोहराते हुए ,विगत तीन-चार दिनों से हो रही बारिश के कारण कार्रवाई नही कर पाने की बात कही।

थाना पेटलावद।

आदिवासी संगठनों सहित विपक्ष भी मौन

वेसे तो प्रदेश सहित देश मे होने वाली कई बलात्कार जैसे अपराध की घटना जिले में राजनीतिक अखाड़े का कारण बन जाती है। आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति के बीच इस गम्भीर अपराध को लेकर सरकार एक ओर लापरवाह दिख रही है, तो वही दूसरी ओर आदिवासी संगठनों सहित विपक्ष के नेता भी पूरी तरह मौन दिख रहे है, जिन्होंने अब तक इस मामले में कोई मांग नही की।

बलात्कार ओर खरीद फरोख्त शिकार पीड़िता।

धूमधाम से मनाया जाएगा गणेश उत्सव, चंद्रयान 3 बना अर्कषण का केंद्र

माही की गूंज, पारा।

गांव मे प्रति वर्ष अनुसार इस वर्ष भी श्री गणेश महोत्सव बड़ी धूम-धाम के साथ मनाया जाएगा। घर-घर विराजे गणेश जी गांव की गलियां व चोराहो पर नेनिहालो ने मनमोहक झांकियां बनाई। महोत्सव की त्यारिया पिछले कई दिनों से चल रही थी। आयोजन कर्ताओं ने गणेश पंडालों को लाइट डेकोरेशन कर सजाया। इसके अलावा इंद्र देवता की मेहरबानी रही तो धार्मिक आयोजन भी होंगे। साथ ही कथा, सुंदरकांड, एक मिनट, चेयर रेस आदि कार्यक्रम भी आयोजित होगे। गांव के अंदर 4 से 5 स्थान पर श्री गणेश जी की स्थापना की गई। सार्वजनिक गणेश मंडल बस स्टैंड, सदर बाजार, बख्तपुरा, लखपुरा, रतिमाली, सार्वजनिक बाल गणेश मंडल आदि स्थानों पर पंडाल सजे। गांव मे छोटे-छोटे बच्चो ने तालाब की काली मिट्टी के गणेश जी बनाए। छोटे कलाकारों ने वाक्य में नकल स्वरूप गणेश जी की आकृति बनाकर रंग-रोगन किया। सार्वजनिक बाल गणेश मंडल के बाल कलाकारों ने गणेश जी की बेहतरीन झाकियां बनाई। जिसमें चंद्रयान 3 मॉडल पर आधारित पांडाल आर्कषण का केन्द्र बना। प्रथम दिन ही चंद्रयान 3 पर आधारित पांडल को देखने के लिए लोगो की भीड़ देखने को मिली। चेतन डोडिया, नानू प्रजापत, दिनेश, अर्जुन, सिद्धार्थ, कुणाल मोदी, दिव्यांश, रोहन, शिवम डावर, गौतम सोनी, राहुल शर्मा भक्तो का सहयोग रहा।

नगर परिषद् का अतिरिक्त प्रभार सौंपा

माही की गूंज, थांदला।

थान्दला-कार्यालय संयुक्त संचालक नगरीय प्रशासन एवं विकास इंदौर संभाग के आदेश अनुसार थांदला मुख्य नगर परिषद् अधिकारी का अतिरिक्त प्रभार सहायक ग्रेड 1 शीतल जैन को सोपा गया। पूर्व में मुख्य नगर परिषद् अधिकारी भारतसिंह टाक जो की 31 अगस्त को सेवानिवृत हो चुके थे, उनके स्थान पर मेघनगर मुख्य नगर परिषद् अधिकारी राहुल वर्मा को अतिरिक्त प्रभार दिया गया था। वही राहुल वर्मा के अतिरिक्त कार्य संपादन में कार्य असमर्थता देखे जाने पर संयुक्त संचालक नगरी प्रशासन विकास इंदौर संभाग के आदेशानुसार शीतल जैन को मुख्य नगर परिषद् अधिकारी की पदस्थापन होने तक व आगामी आदेश जारी होने तक अपने मूल कर्तव्य के साथ-साथ मुख्य नगर परिषद् का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है। उन्होंने अपना पद भार ग्रहण अध्यक्षा श्रीमती लक्ष्मी पणदा के हाथों किया। साथ ही नगर परिषद् के सभी कर्मचारियों ने शुभकामनाएं देते हुए मिठाई खिलाकर उनका अभिवादन किया।

गणेश प्रतिमा स्थापित कर किया विकास यात्रा का शुभारंभ

माही की गूंज, थांदला।

गणेश उत्सव को भगवान श्री गणेश जी के जन्म उत्सव के रूप में मनाया जाता हैं। गणेश चतुर्थी का यह पर्व हर्षोल्लास के साथ संपूर्ण नगर में अनेक स्थानों पर गणेश जी की प्रतिमा स्थापित कर मना जा रहा है। जिसके तारतम्य में नगर परिषद कार्यालय में पर्यावरण का संदेश देते हुए मिट्टी के गणेश जी की मुर्ती स्थापना की गई। जिसके उपरांत नगर में विकास यात्रा का शुभारंभ किया गया, जिसमे नगर परिषद अध्यक्ष लक्ष्मी पणदा, पार्षद एवं जिला योजना समिति सदस्य भूमिका सोनी, समर्थ उपाध्याय, मंडल महामंत्री सुनील पणदा, उपाध्यक्ष जितेंद्र राठौड़, नगर परिषद कर्मचारी विजय गिरी, ओमप्रकाश नागर, निलेश नागर, गौरंकसिंह राठौर, यशदीप अरोरा, गोपाल चुडादिया, अमित त्रिवेदी आदि उपस्थित थे। पूजन विधि पंडित धार्मिक आचार्य द्वारा संपन्न करवाई है।

संस्कृत के प्रचार के लिए विचार गोष्ठी का आयोजन

संस्कृत को जन-जन की भाषा बनाने का उद्देश्य- मोहन डामर

माही की गूंज, पेटलावद।

आध्यात्म मंडल पेटलावद द्वारा देश में संस्कृत के प्रचार-प्रसार अभियान के तहत विगत दिवस संस्कृत भारती के विभाग सह संयोजक मोहनभाई डामर के मुख्य आतिथ्य में एक विचार गोष्ठी का आयोजन रखा गया। संस्कृत व्याख्याता मौहन डामर ने परम पूज्य गुरूदेव अवधूतानंदजी परमहंस महाराज व परम पूज्य गुरूदेव श्री भगवानदासजी फलाहारी महाराज के चित्र पर पुष्प माला पहनाकर व दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा की देश में संस्कृत और संस्कृति का प्रचार-प्रसार करते हुए मां भारती की सेवा में जुट जाना ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया है। इसी कार्यक्रम की कडी में संस्कृत श्लोक मंत्र के उच्चारण किये गये। आध्यात्म मंडल पेटलावद के सुभाष व्यास ने श्री डामर का पुष्प् माला पहनाकर आत्मीय स्वागत किया। उन्होंने मोहन डामर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि, पेटलावद तहसील के सुदुर ग्राम पंचपिपला के गरीब आदिवासी परिवार में जन्में है। संस्कृत भाषा का पूर्ण उत्थान कर रहे है। संस्कृत भाषा को लोग क्लिष्ट व कठीन मानते है। किंतु ऐसा है नहीं, यह एक समय में जन-जन की भाषा थी। संस्कृत की एक कहानी, की कुछ पंक्ति सुनाते हुए बताया कि, पूर्व केंद्रीय मंत्री स्व. श्रीमती सुषमा स्वराज ने संस्कृत के ज्ञान व दक्षिण भारत के एक कार्यक्रम में संस्कृत की सफलता व कम शब्दों में अधिक ज्ञान की बात कही थी।

आध्यात्म मंडल पेटलावद के लोकेश शुक्ला ने मौहन डामर को श्रीमद् भागवत गीता पुस्तक व श्रीफल प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में जालु भगत व नानजी भगत ने गुरूदर्शन को चालो रे सखी थारों जनम मरण मिट जाये भजन की मनमोहक प्रस्तुति दी। इस अवसर पर समाजसेवी कर्मनिष्ठ अमरसिंह गणावा, श्रीमती पुष्पा व्यास, श्रीमती बदु बहन, सुरजमल भंडारी आदि उपस्थित रहे। अंत में कार्यक्रम का आभार प्रदर्शन आध्यात्म मंडल पेटलावद के पंडित प्रमोद कोशिक ने मंगल वचन के साथ किया।

कार्यालय आदिम जाति सेवा सहकारी संस्था मर्यादित काकनवानी जिला झाबुआ (म.प्र.)

पंजीयन क्रमांक 198 *दिनांक 24/03/1976*

क्रमांक/सभा/2023-24 *दिनांक- 13.09.2023*

वार्षिक साधारण आमसभा का एजेण्डा

आदिम जाति सेवा सहकारी संस्था मर्यादित काकनवानी के समस्त अंशधारी सदस्यों महानुभावों को सूचित किया जाता है कि संस्था की वार्षिक साधारण सभा दिनांक 27.09.2023 को बुधवार को संस्था कार्यालय भवन पर दिन के दोपहर 12.00 बजे प्रशासक महोदय की अध्यक्षता में सम्पन्न की जा रही है। जिसमे आपकी उपस्थिति अनिवार्य है।

नोटः- साधारण सभा की बैठक के लिए 1/10 अथवा 50 सदस्य जो भी कम हो कि गणपूर्ति के पश्चात् आमसभा उसी दिनांक व स्थान पर एक घंटे पश्चात सम्पन्न की जावेगी।

विषय सूची :-

1. गत वर्ष 2022-23 आमसभा की पुष्टि करने बाबद विचार।
2. संस्था का वर्ष 2022-23 के आय-व्यय पत्रक, व्यापारिक पत्रक, लाभ-हानि पत्रक, पत्रक को स्वीकृत करने बाबद विचार।
3. संस्था का आगामी वर्ष 2023-24 के लिए अनुमानित बजट स्वीकार करने बाबद विचार।
4. वर्ष 2022-23 के स्वीकृत बजट से अधिक हुई व्ययों की पुष्टि करने बाबद विचार।
5. अन्य विषय प्रशासक महोदय की पूर्वानुमति से।

संस्था के वर्तमान उप-नियम क्रमांक 26 के प्रावधान अनुसार सम्मेलन की बैठक की जावेगी। यदि एक उक्त तिथि को 12:00 बजे गणपूर्ति नही होती है तो बैठक के नियम के अंतर्गत आधे घंटे के लिए स्थगित कर दी जावेगी, और गणपूर्ति कोरम के अभाव में स्थगित साधारण सभा उसी दिन उसी स्थान पर आधे घंटे के बाद दोपहर 12:30 बजे प्रारंभ होगी।

कृपया निर्धारित दिनांक एवं समय पर उक्त साधारण सभा मे भाग लेने की कृपा करें।

संस्था प्रबंधक
आदिम जाति सेवा सहकारी
संस्था मर्या. काकनवानी

कार्यालय आदिम जाति सेवा सहकारी संस्था मर्यादित खजुरी जिला झाबुआ (म.प्र.)

पंजीयन क्रमांक 885 *दिनांक 31/01/1995*

म.प्र. सहकारी समितियों अधिनियम 1960 के अंतर्गत पंजीकृत

क्रमांक/साधारण सभा/2023-24 *दिनांक- 15.09.2023*

वार्षिक साधारण आम सभा का एजेण्डा

आदिम जाति सेवा सहकारी संस्था मर्यादित खजुरी के समस्त अंशधारी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि प्रतिवर्ष अनुसार संस्था की वार्षिक आम सभा दिनांक 26.09.2023 को मंगलवार के दिन संस्था कार्यालय भवन पर दिन के 12.00 बजे श्रीमान प्रशासक महोदय की अध्यक्षता में आयोजित की जाना है आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

नोटः- साधारण सभा की बैठक के लिए 1/10 अथवा 50 सदस्य जो भी कम हो कि गणपूर्ति के पश्चात् आमसभा उसी स्थान पर आधे घंटे पश्चात सम्पन्न की जावेगी।

विषय सूची :-

1. गत आम सभा की पुष्टि करना।
2. वर्ष 22-23 में सम्पन्न हुई संचालक मण्डल कि बैठकों की पुष्टि करना।
3. संस्था का वर्ष 22-23 के वार्षिक पत्रक को स्वीकार करना।
4. संस्था का आगामी वर्ष 23-24 के लिए अनुमानित बजट स्वीकार करना।
5. संस्था का वर्ष 22-23 तक आडिट-नोट की तामिली की पुष्टि करना।
6. अन्य विषय प्रशासक महोदय की पूर्वानुमति से।

संस्था प्रबंधक
आदिम जाति सेवा सहकारी
संस्था मर्या. खजुरी

कार्यालय जिला सहकारी केंद्रिय बैंक कर्मचारी सहकारी साख संस्था मर्या.झाबुआ

पंजीयन क्रमांक 365 *दिनांक 19/03/1965*

वार्षिक आम सभा 2023-24 *दिनांक- 10.09.2023*

वार्षिक - साधारण सभा

जिला सहकारी केन्द्रिय बैंक कर्मचारी सहकारी साख संस्था मर्या. झाबुआ के समस्त सदस्य महानुभवों को सूचित किया जाता है कि वार्षिक साधारण सभा दिनांक 24.09.2023 शनिवार को संस्था कार्यालय जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मर्या प्रधान कार्यालय झाबुआ पर 01.00 बजे आयोजित की गई है जिसमे आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

निर्धारित समय पर कोरम पूरा न होने पर सभा स्थगित कर आधे घण्टे पश्चात उसी स्थान पर सभा की कार्यवाही प्रारंभ की जावेगी। उसमे गणपूर्ति की आवश्यकता नहीं रहेगी। सभी सदस्यों को सुचना पृथक से डाक द्वारा भेजी गई है।

अध्यक्ष
सहकारी केंद्रीय बैंक
कर्मचारी सहकारी साख
संस्था मर्या. झाबुआ

संपादकीय

महिला आरक्षण बिल

यह सुखद संयोग ही है कि नई संसद का आगाज देश की नारी शक्ति को उसके दशकों से लंबित हक देने से हुआ है। सोमवार को केंद्रीय कैबिनेट ने लोकसभा व विधानसभाओं में तैंतीस फीसदी आरक्षण को मंजूरी दी थी। नि:संदेह, इसका देश-दुनिया में सकारात्मक संदेश जाएगा कि हम महिलाओं को उनके वाजिब हक देने को प्रतिबद्ध हैं। नि:संदेह, इस कदम से भारतीय लोकतंत्र में महिलाओं की सशक्त भूमिका होगी। यह प्रयास आम महिलाओं के सशक्तीकरण की राह भी खोलेगा। कह सकते हैं कि करीब तीन दशक से अटके महिला आरक्षण बिल को मूर्त रूप देने का नैतिक साहस राजग सरकार ने दिखाया। इससे लोकसभा में मौजूद 14 फीसदी व राज्यसभा में 12 फीसदी महिलाओं की स्थिति में अब सम्मानजक ढंग से इजाफा होगा। पहले संसद के विशेष सत्र को लेकर तरह-तरह के कयास लगाए जा रहे थे, अब लगता है कि विशेष सत्र बुलाना एक सार्थक कदम साबित होगा। राजग सरकार ने इस बिल का नाम नारी शक्ति वंदन अधिनियम रखा है। उल्लेखनीय है कि, वर्ष 1974 में महिलाओं की स्थिति का आकलन करने वाली समिति ने महिला आरक्षण की वकालत की थी। इस बीच विभिन्न सरकारों में इस विधेयक को सिरे चढ़ाने की कोशिश हुई। फिर वर्ष 2010 में संप्रग सरकार ने इस ?विधेयक को राज्यसभा में पारित किया था। लेकिन तब संप्रग सरकार में शामिल राजद, सपा व झामुमो आदि दलों ने इसमें जातिगत आरक्षण की मांग उठाकर विधेयक की गति थाम दी थी। वैसे सवाल उठाया जा सकता है कि, वर्ष 2014 में महिला आरक्षण के मुद्दे को अपने घोषणा पत्र में शामिल करने के बावजूद इसे मूर्त रूप देने में इतना वक्त क्यों लगा। क्या जब देश आम चुनाव की ओर बढ़ चुका है तब महिला आरक्षण के मुद्दे को अमलीजामा पहनाने की कवायद हुई है...? एक पहलू यह भी है कि विधेयक के कानून का रूप लेने के बावजूद इसका क्रियान्वयन तब संभव होगा, जब देश में जनगणना के उपरांत होने वाला परिसीमन पूर्ण होगा। यानी महिला आरक्षण का लाभ आगामी आम चुनाव में संभव नहीं होगा।

बहरहाल, जनप्रतिनिधि संस्थाओं में महिला आरक्षण की व्यवस्था होना भारतीय लोकतांत्रिक इतिहास में एक बड़ी घटना होगी। बेहतर होगा कि संसद के नए भवन में इस मुद्दे पर सभी राजनीतिक दल स्वस्थ चर्चा करें और आम सहमति बनाएं। इस तरह नया संसद भवन दोहरा इतिहास रचेगा। यद्यपि राजग सरकार ने विधेयक के मसौदे पर आधिकारिक स्तर पर विस्तृत जानकारी नहीं दी है, कयास लगाये जा रहे हैं कि इसके मूल स्वरूप को बरकरार रखने की कोशिश होगी। अब देखना होगा कि जिन मुद्दों पर लंबे समय तक महिला आरक्षण का विरोध किया जाता रहा है, उन्हें किस तरह संबोधित किया जाता है। हालांकि, तब विरोध करने वाले राजनीतिक दल फिलहाल दबाव बनाने की स्थिति में नहीं हैं। जिनके विरोध के चलते ही महिला आरक्षण बिल को पांच बार पारित करने की असफल कोशिश हो चुकी है। बहरहाल, इस बिल के पारित होने से देश में लैंगिक समानता आएगी। इस समय दुनिया में लोकतांत्रिक संस्थाओं में महिलाओं की औसतन हिस्सेदारी 26 फीसदी है, जबकि वर्तमान में भारत में यह प्रतिशत 15.21 है। वहीं राज्य विधानसभाओं में स्थिति और ज्यादा खराब है, किसी भी राज्य में 15 फीसदी महिलाओं की भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में भागीदारी नहीं बन पाई। बहरहाल, नए विधेयक के कानून बनने के बाद भारतीय जनप्रतिनिधि संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी तैंतीस फीसदी हो जाएगी। वैसे तो देश के लोकतांत्रिक इतिहास में महिला जनप्रतिनिधियों की विशिष्ट भूमिका रही है। जिन्होंने न केवल सदन की गरिमा बनाने में बड़ी भूमिका निभाई, बल्कि अनेक महत्वपूर्ण निर्णयों में रचनात्मक योगदान भी दिया। देश की संसद के दोनों सदनों में पिछले साढ़े सात दशकों में करीब छह सौ महिला जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति रही। बहरहाल, देर आए दुरुस्त आए, की तर्ज पर इसे भारतीय लोकतंत्र की शुभ शुरुआत कहा जा सकता है। इसके बावजूद उम्मीद करें कि जमीन से जुड़ी व महिला सरोकारों को प्रतिबद्ध महिलाएं ही जनप्रतिनिधि सदनों में पहुंचें। ऐसा न हो कि पहले से मौजूदा राजनीति में सक्रिय राजनीतिक घरानों के नेता इस पहल को अपने परिवार की महिलाओं के नाम पर राजनीति करने के अवसर में ही बदल दें।

बहिष्कार नहीं, सार्थक बनाने से बनेगी बात

विश्वनाथ सचदेव

बहिष्कार और असहयोग में क्या अंतर है? भारत की राजनीति में यह दोनों शब्द राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के ही दिये हुए हैं। आज़ादी की लड़ाई के दौरान उन्होंने जो 'हथियार' देश की जनता को दिये थे उनमें ये दोनों काफी कारगर सिद्ध हुए थे। वैसे अंग्रेज़ी माल के बहिष्कार की शुरुआत वर्ष 1905 में बंगाल-विभाजन के विरोध में हुई थी, पर आगे चलकर गांधी जी ने इसे स्वदेशी-आंदोलन का रूप दिया। यह 1920 की बात है। स्वराज के लिए स्वदेशी का नारा देकर उन्होंने आज़ादी की लड़ाई को एक निर्णायक दिशा दी थी। असहयोग इसी स्वदेशी-आंदोलन का दूसरा नाम था। हाल ही में यह दोनों शब्द भारत की राजनीति में फिर उछले हैं। भाजपा-विरोधी राजनीतिक दलों के 'इंडिया' गठबंधन ने घोषणा की है कि वह मीडिया के कुछ एंकरों का बहिष्कार करेंगे। उनका कहना है कि कुछ समाचार चैनलों के एंकर यानी कार्यक्रम के प्रस्तोता सरकारी प्रचार के काम में इस तरह लगे हुए हैं कि निर्भयता और निष्पक्षता के पत्रकारीय दायित्व को ही भुला बैठे हैं। इसे उन्होंने 'गोदी मीडिया' नाम दिया है। कुल 14 एंकरों के नाम लेकर कहा गया है कि वे निर्बाध रूप से भाजपा सरकार के पक्ष में हवा बनाने का काम कर रहे हैं।

यह आरोप अपने आप में नया नहीं है। अर्से से कुछ चैनलों पर 'सरकारी' होने की बात कही जाती रही है। पर इससे ऐसे चैनलों पर कुछ असर पड़ा है, ऐसा नहीं लग रहा। इसी को देखते हुए मीडिया की भूमिका सवालों के घेरे में आती रही है। पत्रकारिता से यह अपेक्षा की जाती है कि वह विवेकपूर्ण तरीके से काम करेगी और निष्पक्ष रहकर समाज को वास्तविकता से परिचित कराती रहेगी। इसमें कोई संदेह नहीं कि पिछले एक अर्से से इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता 'पक्षपातपूर्ण' रवैया अपनाने का आरोप झेल रही है। यह स्थिति जनतांत्रिक परंपराओं के अनुरूप तो कतई नहीं है। जनतांत्रिक मूल्यों-परंपराओं का तकाज़ा है कि पत्रकारिता निर्भयतापूर्वक प्रहरी का काम करे, निष्पक्षता के साथ समस्याओं के समाधान की दिशा दिखाने की भूमिका निभाये। 'इंडिया' गठबंधन का कहना है कि हमारी टीवी पत्रकारिता का एक हिस्सा यह कार्य नहीं कर रहा, इसलिए इस गठबंधन के सदस्य राजनीतिक दल ऐसे एंकरों के कार्यक्रमों का बहिष्कार करेंगे। गठबंधन की इस कार्रवाई को लेकर जब कुछ आवाज़ उठने लगी तो इस 'बहिष्कार' को 'असहयोग' कहकर स्थिति संभालने की कोशिश की गयी। इस प्रकरण का हमारी राजनीति पर क्या असर पड़ता है यह तो आने वाला कल ही बतायेगा, पर पत्रकारिता के स्वास्थ्य को लेकर एक सुगबुगाहट ज़रूर शुरू हो गयी है।

एक तरफ कांग्रेस समेत गठबंधन के सदस्य दलों की इस कार्रवाई को इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को चेतावनी देने वाला बताया जा रहा है तो दूसरी तरफ इस कार्रवाई को ग़लत बताने वाले इसे अजनतांत्रिक कह रहे हैं। कहा जा रहा है कि मीडिया का यह 'बहिष्कार' मीडिया पर अनुचित दबाव डालने की कोशिश है। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि जनतंत्र का चौथा स्तंभ माने जाने वाले मीडिया पर पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाने का आरोप लग रहा है।

जहां तक एंकरों की भूमिका का सवाल है, उन्हें भी अधिकार है अपनी राजनीतिक राय और समझ रखने का, पर यह समझ उनकी निष्पक्षता पर हावी नहीं होनी चाहिए। 'प्राइम टाइम' में 'डिबेट' के कार्यक्रमों में उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने प्रश्नों और हस्तक्षेप से दर्शक-श्रोता को स्थिति को समझने में मदद देंगे। सवाल उठाना पत्रकारिता का धर्म है, पर यदि सवाल के पीछे की मंशा पर सवालिया निशान लगने लगे तो यह ज़रूरी हो जाता है कि टीवी पत्रकार और मीडिया-प्रबंधन अपने गिरेबान में झांके। दुर्भाग्य से ऐसा होता दिख नहीं रहा। ऐसा लग रहा है जैसे मीडिया का एक बड़ा हिस्सा किन्हीं दबावों में काम कर रहा है। जनतांत्रिक मूल्यों और परंपराओं की दृष्टि से यह स्थिति किसी भी तरह से अच्छी नहीं कही जा सकती। यह स्थिति बदलनी ही चाहिए। पर क्या 'बहिष्कार' या 'असहयोग' से यह स्थिति बदल जाएगी?

होना तो यह चाहिए कि इस स्थिति को बदलने की मांग करने वाले राजनीतिक दल प्राप्त सुविधा का अधिकतम लाभ लेने की कोशिश करें। इस संदर्भ में एक पुरानी, लगभग 50 साल पहले की घटना याद आ रही है। वे आपातकाल के दिन थे। मीडिया तानाशाही के च?ंगुल में था। तब कुछ पत्रकारों ने यह सोचा था कि वे 'सरकारी मीडिया' का सहयोग नहीं करेंगे। ऐसे लोगों में मैं भी एक था जो यह मानते थे कि ऐसा कुछ नहीं किया जाना चाहिए कि उससे वक्त की सरकार का हित-साधन हो। मेरे जैसे कई लोगों ने तब आकाशवाणी और दूरदर्शन के कई कार्यक्रम करने से इनकार कर दिया था। उन्हीं दिनों एक बातचीत के दौरान प्रतिष्ठित फिल्मकार श्याम बेनेगल ने कहा था, 'मैं यह मानता हूं कि यदि आज की स्थिति में हज़ार फुट की एक फिल्म में मुझे सौ फुट अपने मन की फिल्माने का मौका मिलता है तो मुझे यह अवसर गंवाना नहीं चाहिए। मेरी कोशिश होनी चाहिए मैं ऐसे अवसर तलाशूं और उनका लाभ उठाऊं।' उनकी यह बात मुझे जंच गयी थी। और तब मैंने दूरदर्शन के कुछ ऐसे कार्यक्रम किये भी थे जिनमें मैं अपने मन की बात कह सका था। इस कदम का दूरदर्शन के दर्शकों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा होगा, ऐसा मैं नहीं मानता, पर अंधेरे में सूर्योदय होने की आहट दिखा पाने का यह संतोष मुझे अवश्य मिला था। यह संतोष भी किसी उपलब्धि से कम नहीं था।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के कुछ एंकरों का बहिष्कार करने वालों को यह सोचना चाहिए कि कथित गोदी मीडिया वालों को विफल बनाने का एक तरीका यह भी है कि उनके प्रयासों की धार कुंठित की जाये। राजनीतिक दलों के प्रवक्ताओं को ठोस तैयारी के साथ ऐसे कार्यक्रमों में जाकर विरोध के प्रयासों को सफल बनाने की कोशिश करनी चाहिए। जरूरी है कि पक्षपातपूर्ण एंकरों का चेहरा बेनकाब हो, और यह काम ऐसे टीवी पत्रकारों को चुनौती देकर अधिक सफलता-पूर्वक किया जा सकता है। मीडिया का बहिष्कार नहीं, मीडिया को सार्थक बनाने की कोशिश होनी चाहिए। यह सही है कि आज हमारा मीडिया अपनी उचित और समुचित भूमिका निभाने में विफल होता दिख रहा है, पर बहिष्कार से तो मीडिया के ग़लत तत्वों को और खुला मैदान ही मिलेगा।

एक बात और भी है। सभी एंकर मीडिया में अपनी मनमानी भी तो नहीं कर सकते। उनकी नकेल भी तो किसी के हाथ में होती है। विरोध उन हाथों का होना चाहिए। ये हाथ सरकार के भी हो सकते हैं, और मालिकों के भी। इन हाथों की गतिविधियों पर नज़र होनी चाहिए।

ऐसा नहीं है कि देश का नागरिक इन गतिविधियों को नहीं देख सकता, या नहीं देख रहा। आज आवश्यकता स्वस्थ पत्रकारिता के पक्ष में आवाज़ उठाने की है। यह स्थिति सचमुच दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज हमारा मीडिया का एक वर्ग अपनी विश्वसनीयता खोता जा रहा है। इस विश्वसनीयता को बनाने, बनाये रखने का मुख्य दायित्व तो मीडिया वालों का ही है, पर विवेकशील नागरिकों का भी दायित्व बनता है कि वे मीडिया की असफलता और ग़लत कामों की अनदेखी न करें। ज़रूरत सूर्योदय की आहट को सुनने, समर्थन देने की है।

सनातन विवाद खालिस सियासी खुराफात

अनिल बिहारी श्रीवास्तव

सनातन विवाद पर मद्रास हाईकोर्ट की टिप्पणी और अनेक शीर्ष संतों सहित समूचे हिंदू समुदाय की नाराजगी को देखते हुए क्या द्रमुक नेताओं की खोपड़ी में समझदारी का बीज अंकुरित होने की उम्मीद की जा सकती है? पिछले कुछ समय से द्रमुक के नेता सनातन, उत्तरी भारतीयों विशेषकर बिहार और उत्तर प्रदेश के लोगों और हिंदी को लेकर असभ्य अंदाज में टिप्पणियां करते आ रहे हैं। संदेह स्वाभाविक है कि इन हरकतों को तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के.स्टालिन की मौन स्वीकृति प्राप्त है। इधर, सनातन धर्म को लेकर चल रही बहस के बीच मद्रास हाईकोर्ट के जस्टिस एन.शेषशायी ने अहम टिप्पणी की है। उन्होंने कहा, 'सनातन धर्म शाश्वत कर्तव्यों का समूह है, जिसमें राष्ट्र, राजा, माता-पिता और गुरुओं के प्रति कर्तव्य और गरीबों देखभाल शामिल है।' जस्टिस शेषशायी ने उस याचिका की सुनवाई के दौरान यह बात कही जिसमें एक गवर्नमेंट कालेज की ओर से जारी सर्कुलर को चुनौती दी गई थी। सर्कुलर में छात्रों से सनातन का विरोध विषय पर अपनी राय बताने के लिए कहा गया था। हालांकि याचिका दायर होने की जानकारी लगते ही कालेज प्रबंधन में सर्कुलर वापस ले लिया। माना जा रहा है कि द्रमुक नेताओं के आशीर्वाद के भरोसे ही कालेज प्रबंधन ने इस तरह का असंवैधानिक कृत्य करने का दुस्साहस किया होगा। एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि जस्टिस शेषशायी ने जोर देकर कहा है कि 'फ्री स्पीच फंडामेंटल राइट है लेकिन नफरत फैलाने वाले भाषण देने की इजाजत नहीं देता। खासकर जब यह धर्म से जुड़ा मामला हो।' सनातन विरोधी ताजा विवाद की शुरूआत तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के.स्टालिन के पुत्र और राज्य के युवा कल्याण एवं खेल मामलों के मंत्री उदयनिधि स्टालिन द्वारा दो सितम्बर को चेन्नई में तथाकथित प्रगतिशील लेखकों और कलाकारों के एक संगठन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सनातन धर्म की तुलना डेंगू और मलेरिया से किए जाने से हुई थी। उदयनिधि ने कहा था कि 'इसका विरोध नहीं, बल्कि इसे पूरी तरह खत्म कर दिया जाना चाहिए।' विवाद बढने् पर एम.के.स्टालिन नपे-तुले शब्दों में सफाई दी, 'उदयनिधि स्टालिन का इरादा किसी धर्म की मान्यताओं को ठेस पहुंचाने का नहीं था।' स्वयं उदयनिधि की ओर से जो स्पष्टीकरण आया उसमें खेद या क्षमा भाव का रत्तीभर पुट नही दिखा। उसने कहा, 'हम किसी धर्म के दुश्मन नहीं हैं।' हिंदी, उत्तर भारतीयों और सनातन के प्रति असभ्य भाषा के प्रयोग का द्रमुक नेताओं का लंबा रिकार्ड है। चौतरफा आलोचनाओं से छोटे स्टालिन ने चुप्पी का स्वांग रचा तो द्रमुक के दूसरे नेता सक्रिय हो गए। इनमें एक नाम बड़बोले नेता ए.राजा है। ए. राजा ने सनातन की तुलना एडस और कुष्ठ रोग से की है। एक ताजा वीडियो देखने में आया जिसमें ए.राजा सनातन धर्म को पूरी दुनिया के लिए खतरा बता रहा है। 13 सितम्बर को इसका एक और भडक़ाऊ बयान आया। इसने कहा है, 'एक व्यक्ति तब तक शूद्र रहता है जब तक वह हिंदू है।' ए.राजा पहले भी आर.एस. एस. और प्रधानमंत्री के संदर्भ में अपमानजनक और असभ्य टिप्पणियां कर चुका है। जुलाई 2022 में ए.राजा ने प्रधानमंत्री श्री मोदी और गृह अमित शााह से कहा था कि 'तमिलनाडु को स्वायतत्ता दें। हमें स्वतंत्र तमिलनाडु देश मांगने पर विवश नहीं होने दें।' एक अन्य द्रमुक नेता के.पोनमुडी है। यह व्यक्ति तमिलनाडु का उच्च शिक्षा मंत्री है। पोनमुडी ने कहा है कि आईएनडीआईए को सनातन के खिलाफ लडने् के लिए बनाया गया है। सनातन को खत्म करना है तो मतदाता चुनावों में आईएनडीआईए को वोट दे। जुलाई 2021 में तमिलनाडु के मंत्री और द्रमुक नेता के.एन. नेहरू ने अपनी रंगभेदी टिप्पणी से खासा विवाद खड़ा कर दिया था। उसने कहा था, तमिलों की तुलना में बिहारियों में बुद्धि कम होती है। बिहारियों और उत्तर भारतीयों को तमिल और अंग्रेजी नहीं आती लेकिन वो तमिलों की नौकरियां छीन लेते हैं। द्रमुक नेताओं की नफरती बयानबाजी खत्म होने का नाम नहीं ले रही। द्रमुक का एक प्रवक्ता है सी. रविन्द्रन, उसने हाल ही में सनातन विवाद को और हवा दे दी। रविन्द्रन कहा है, 'यू.पी. और बिहार के लोगों का दिमाग कम होता है। ये लोग सनातन धर्म मानते हैं इसलिए इनमें बुद्धि और सामान्य बोध का अभाव होता है।' द्रमुक नेताओं की इन असभ्य और अपमानजनक टिप्पणियों से एक बात समझ में आती है कि इनकी रग-रग में उत्तर भारतीयों, हिंदी और सनातन के विरूद्ध जहर भरा है। यह राय बनने लगी है कि इनको चुपचाप सहन करने की कतई जरूरत नहीं है, उचित जवाब दिया जाना चाहिए। द्रमुक नेताओं का व्यवहार साबित कर रहा है कि तमिलनाडु में भाजपा के उभार से उनमें बेचैनी है। भडक़ाऊ और अपमानजनक बयानों का मकसद हिंदू वोट बैंक को जाति, नस्ल, भाषा और क्षेत्रीयता के आधार पर विभाजित करना है। आश्चर्य का विषय है कि सत्ता के मोह में 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए एकजुट हुए विपक्षी दल द्रमुक नेताओं के नफरती हथकंडों पर ना केवल चुप्पी साधे हुए हैं बल्कि कुछ नेताओं ने सनातन विवाद में उदयनिधि स्टालिन का बचाव करने की कोशिश की। विपक्षी गठबंधन, इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इंक्लूसिव एलायंस(आईएनडीआईए) ने सनातन विवाद पर चुप्पी साध ली है। इसके दो कारण हो सकते हैं, या तो द्रमुक को नाराज करने की हिम्मत नही हो या फिर कोई सियासी खुराफात। आईएनडीआईए की समन्वय समिति की पहली बैठक के बाद कहा गया है कि 'सनातन धर्म के मुद्दे से जुड़े विवाद पर गठबंधन से कोई बयान नहीं दिया जाएगा क्योंकि एम.के.स्टालिन इस मुद्दे पर गठबंधन का स्टैंड साफ कर चुके हैं।' उदयनिधि के बयान को आईएनडीआईए के इक्का-दुक्का नेताओं ने ही खुलकर नापसंद किया है। इनमें एक नाम ममता बनर्जी है, जिन्होंने बड़े संतुलित अंदाज में उदयनिधि के बयान की निंदा की है। आम आदमी पार्टी के नेता राघव चड्ढा ने कहा, 'मैं सनातन धर्म से हू और ऐसे बयानों का विरोध करता हूं। यह विपक्षी गठबंधन का बयान नहीं है। किसी ने बहुत सही सवाल उठाया है, लालू यादव, नीतीश कुमार से लेकर हनुमान भक्त अखिलेश यादव और शिवभक्त राहुल गांधी सनातन के अपमान पर क्यों चुप हैं? कांग्रेस महासचिव के.सी. वेनुगोपाल ने अभिव्यक्ति की आजादी की आड़ लेते हुए उदयनिधि का समर्थन यह कहते हुए किया कि 'सभी को अपनी बात कहने की आजादी है।' कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के पुत्र और कर्नाटक के मंत्री प्रियांक खरगे ने ज्ञान बांटा, 'ऐसा धर्म जो समानता को बढ़ावा नहीं देता या मनुष्यता के सम्मान को बढ़ावा नहीं देता वह एक धर्म नहीं है।' आचार्य प्रमोद एक मात्र ऐसे कांग्रेस नेता हैं जिन्होंने उदयनिधि के बयान को खुल कर नापसंद किया। इन दिनों जमानत पर जेल से बाहर आकर राजनीतिक देशाटन का आनंद उठा रहे राजद प्रमुख लालू यादव सनातन के अपमान के विरोध को भाजपा द्वारा अनावश्यक विवाद खड़ा किया जाना बताते हैं। खराब स्वास्थ्य और भौतिक जगत में खासे मान-मर्दन के बाद भी लालू के चेहरे पर शर्म की सिकन तक नहीं दिखती। यह गौर करने लायक बात है कि जातिगत भेदभाव के नाम पर सनातन का विरोध करने वाले द्रमुक नेताओं में नास्तिकों या मतांतरितों की भरमार है। उदयनिधि स्वयं को 'प्राउड क्रिश्चियन' कहता है। ऐसे व्यक्ति को किसी अन्य धर्म के बारे में बोलने का क्या अधिकार है? भाजपा के राष्ट्रीय सचिव सी.टी.रवि ने सटीक प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उन्होंने कहा, 'धर्म और जातिवाद दो अलग-अलग विषय हैं। उन्हें जोड़ कर नहीं देखा जाना चाहिए।' जातिवाद और भेदभाव का आरोप लगा कर द्रमुक के नास्तिक या मतांतरित नेता सनातन को कोसते रहते हैं। इसका एक उद्देश्य उत्तर और दक्षिण के बीच खाई खोदना हो सकता है। उनके निशाने पर सनातन, हिंदी और उत्तर भारतीय ही क्यों रहते हैं? दुनियाभर से मतांतरितों के साथ भेदभाव के उदाहरण सामने आते रहते हैं। क्या ईसाई और मुस्लिम समाज में भेदभाव नहीं है? चलते-चलते एक ताजा खबर का उल्लेख जरूरी लग रहा है। तमिलनाडु पुलिस ने विश्व हिंदू परिषद के पूर्व नेता आरबीवीएस मणियन को गिरफ्तार कर लिया है। 11 सितम्बर को एक आध्यात्मिक कार्यक्रम में उन्होंने दलितों के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी की थी। वाकई कमाल कर दिया। अब उत्सुकता है कि सनातन और उत्तर भारतीयों के विरूद्ध जहर उगलने वालों पर उसकी नजर कब पड़ेगी। फिलहाल सोशल मीडिया में छाए एक कमेंट पर नजर टिकी हुई है-' देसी स्टालिनों के राज्य में सनातन विरोधी विषवमन और वहां ओरिजनल स्टालिन के देश रूस में समूचा गांव सनातनी बन गया।' वाह।

कृषि से जुड़ी आबादी को मिले विकास का फायदा

देविंदर शर्मा

बीते दिनों एक राष्ट्रीय दैनिक में प्रकाशित पहले पन्ने की रिपोर्ट ने मेरी बात की ही पुष्टि की गई कि, 'कृषि को इतने वर्षों में जानबूझकर गरीब रखा गया है।' जब तक अर्थशास्त्रियों और नीति निर्माताओं के हाथों में कृषि महज महंगाई नियंत्रण के एक औजार के रूप में रहेगा तब तक किसानों को मुश्किलों की उस गहरी दलदल से केवल कोई चमत्कार ही बाहर निकाल सकता है। अपनी इस मौजूदा स्थिति के लिए किस्मत को ही दोष देने वाले किसान शायद ही कभी समझ सकें कि कैसे हकीकत में वे उस दोषपूर्ण आर्थिक प्रारूप के शिकार हैं जो उनके समाज में निचले पायदान पर जैसेदृतैसे गुजर-बसर को यकीनी बनाता है।

खरीफ सीजन की फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में बढ़ोतरी के प्रस्ताव पर नीति आयोग, वित्त मंत्रालय के व्यय विभाग और वाणिज्य मंत्रालय ने अन्य मुद्दों के साथ ही बढ़ती मुद्रास्फीति को चिंता का विषय बताते हुए शंकाएं जताई थीं। बीती 29 अगस्त को राष्ट्रीय अंग्रेजी दैनिक समाचारपत्र में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार, जहां वाणिज्य मंत्रालय ने सार्वजनिक स्टॉकहोल्डिंग के लिए विश्व व्यापार संगठन के मानदंडों के तहत दायित्वों की बात कहकर आपत्ति जताई, वहीं खाद्य और नागरिक आपूर्ति मंत्रालय ने मूल्य वृद्धि के परिणामस्वरूप अतिरिक्त वित्तीय बोझ पड़ने की बात सामने रखी। संक्षेप में, ऐसा लगता है कि प्रत्येक संबंधित मंत्रालय को किसानों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य में अनुमानित बढ़ोतरी से समस्या थी।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल ने आखिरकार ख़रीफ़ सीज़न के एमएसपी को 6 से 10 फीसदी के बीच कीमतों में वृद्धि को मंजूरी दे दी। यह देखते हुए कि कृषि लागत और मूल्य आयोग (सीएसीपी) द्वारा गणना की गई उत्पादन लागत में भी उसी अनुपात में वृद्धि हुई है, एमएसपी की घोषणा मुश्किल से उस बढ़ी हुई लागत को पूरा करती है जो किसानों ने फसल उगाने में लगाई।

इसमें रिज़र्व बैंक की मैक्रो-प्रबंधन नीतियां शामिल करें, जो सुनिश्चित करती है कि मुद्रास्फीति 4 प्लस/माइनस 2 प्रतिशत के निर्धारित मानक के भीतर बनी रहे; किसानों के पास कम से कम अपनी खेती की लागत पूरी करने के तरीके खोजने के लिए अपना संघर्ष जारी रखने के अलावा कम ही विकल्प बचा है। यह मानते हुए कि कुल उपज का केवल 14 प्रतिशत सरकारी एजेंसियों द्वारा खरीदा जाता है, देश की बाकी 86 फीसदी फसल बाजारों की दया पर निर्भर रहती है। अगर बाजार किसी भी तरह से किसानों के प्रति उदार होता, तो देश में एमएसपी के लिए कानूनी पवित्रता की मांग को लेकर किसान आंदोलनों न बढ़ते।

एमएसपी जो सरकार साल में दो बार, रबी और खरीफ सीजन के लिए अलग-अलग घोषित करती है, भी हमेशा सवालों के घेरे में रही है। जबकि सीएसीपी उत्पादन लागत और समग्र मांग पूर्ति की स्थिति के लिए अखिल भारतीय भारित औसत के आधार पर कीमतें तय करता है, और वैश्विक कीमतों को भी देखता है, इस पद्धति पर लगातार सवाल उठे हैं। दिलचस्प यह कि हाल में एक समाचारपत्र में प्रकाशित अन्य न्यूज रिपोर्ट के अनुसार, कम से कम नौ प्रांतीय सरकारों ने अपने-अपने राज्यों में बढ़ी उत्पादन लागत के लिए विभिन्न कारणों का उल्लेख करते हुए कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय से कीमतों को संशोधित करने के लिए कहा था।

यह पहली बार नहीं था कि कुछ सरकारों ने बनिस्बत ज्यादा कीमतों की मांग की। असल में, मेरा मानना है कि अब कुछ दशकों से राज्य सरकारें जो उत्पादन लागत और अनुशंसित कीमत भेजती हैं वे सरकारी वित्त-पोषित कृषि विश्वविद्यालयों से तय की जाती हैं। मसलन, पंजाब ने इस साल धान के लिए 3,234 रुपये कीमत का सुझाव दिया था, जबकि अंतिम अनुशंसा की कई कीमत 2,183 रुपये प्रति क्विंटल थी। केरल ने धान के लिए 3,600 रुपये प्रति क्विंटल की कीमत का सुझाव दिया था, इसी तरह ओडिशा ने 2,930 रुपये प्रति क्विंटल, छत्तीसगढ़ ने 2,800 रुपये क्विंटल, तमिलनाडु ने 2,300 रुपये क्विंटल और पश्चिम बंगाल ने 2,500 रुपये प्रति क्विंटल। इसी प्रकार, ख़रीफ़ की दूसरी फसलों के लिए, इन प्रांतों ने फसल मूल्य के सुझाव दिए, जो अंततः घोषित की गई कीमत के मुकाबले अधिक थे।

मोटे तौर पर खाद्य वस्तुएं उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) में भारित औसत का 45 फीसदी हिस्सा होने के चलते सभी का ध्यान खाद्य महंगाई काबू करने पर रहता है। खाद्य वस्तुओं में से किसी की भी कीमत में मामूली तेजी मीडिया में सुर्खी बनती है। इस साल टमाटर की कीमतों का मामला ही लें। जबकि इसकी खुदरा कीमतों ने कुछ समय के लिए ही 200 रुपये प्रति किलोग्राम के आंकड़े को छुआ, समाचार माध्यमों ने मुद्दे को दिन-रात उछाले रखा। पर जब इसके थोक भाव 14 से 10 रुपये किलोग्राम तक गिर गये, मीडिया चुप हो गया। इस मुद्दे को सही संदर्भ में रखने के लिए, कर्नाटक कृषि मूल्य आयोग की एक नवीनतम रिपोर्ट पर नजर डाल कर देखी जाये। उसके मुताबिक, यदि स्वामीनाथन फॉर्मूला (विस्तृत लागत .50 प्रतिशत लाभ) का प्रयोग करके कीमत की गणना की जाती है, तो टमाटर की फार्म गेट कीमत 20 रुपये प्रति किलोग्राम ठहरती है। मान लीजिये कि चार सदस्यों वाले परिवार के लिए टमाटर की औसत जरूरत प्रति सप्ताह लगभग 3.75 किलोग्राम है। यदि वे इसका उपभोग करते हैं तो यह दैनिक वेतन का बमुश्किल 3 फीसदी बैठता है। लेकिन मीडिया जो हंगामा पैदा करता है उससे ऐसा आभास होता है कि जैसे कीमतें बढ़ने से गरीब कामगारों को अपना पेट भरना मुश्किल हो जाता है।

लेकिन जब किसानों के लिए फसल के भाव गिरते हैं उससे किसानों और दैनिक वेतनभोगियों की आजीविका की सुरक्षा का क्या होगा, इस पर कभी बात नहीं होती है। भारत जैसे देश में जहां तकरीबन 50 फीसदी जनसंख्या कृषि पर निर्भर है, जब तक किसान की आय का स्तर बेहतर नहीं होगा, बाजार मांग कम ही बनी रहेगी। दरअसल यह एहसास ही नहीं कि किसान भी एक उपभोक्ता है। जब तक उसे बनिस्बत अधिक आय नहीं प्राप्त होती, वह उस वर्ग में शामिल होने में समर्थ नहीं होगा जिससे उपभोग खर्च में वृद्धि होती है। दरअसल, जब भी कीमतें बढ़ती हैं तो सरकार महंगाई घटाने के लिए आयात करती है या निर्यात में कटौती कर देती है। यानी इरादा किसानों को मिलने वाली कीमतों में वृद्धि नहीं होने देने का है।

निस्संदेह, किसानों को जानबूझकर गरीब रखना 'सबका साथ सबका विकास' फलीभूत करने का तरीका नहीं है। समग्र संवृद्धि हासिल करने के लिए, विकास के फायदे उस बहुसंख्यक आबादी तक पहुंचाने होंगे, जो भारत में कृषि क्षेत्र में संलग्न है। खेती को आर्थिक तौर पर व्यवहार्य और फायदे का काम कैसे बनाया जाए, अमृत काल के दौरान इस पर फोकस करना होगा। कृषि को सुधार जरूरी हैं, लेकिनै पहले एमएसपी को किसानों का कानूनी अधिकार बनाया जाये। यदि देश के 86 फीसदी किसान बाजार की अस्थिरता और अनिश्चितता से दो-चार होते हैं (14 प्रतिशत को एमएसपी मिलता है), तो समाज के सबसे निचले तबके के लोगों के लिए बहुत कम उम्मीद है। इसके अलावा, विश्व बैंक के अनुसार, भारत की आबादी का लगभग 91 प्रतिशत रोजाना 4 डॉलर यानी प्रतिदिन 280 रुपये से भी कम में गुजर-बसर करता है। वजह यह है कि आर्थिक सुधारों का लक्ष्य अब तक केवल औद्योगिक क्षेत्र ही रहा। यदि तरक्की के सैकिंड इंजन के रूप में कृषि पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, तो 4 डॉलर रोजाना से कम पर जीवनयापन करने वाली आबादी में काफी कमी आएगी। निस्संदेह, अगले पांच वर्ष खेती को दे दीजिए। कृषि के विकास को पर्याप्त आर्थिक पैकेज और प्रोत्साहन दें, जैसे इंडस्ट्री को मिले हैं। उससे सामाजिक-आर्थिक बदलाव सिर्फ शानदार ही नहीं होगा बल्कि आजादी के सौ साल पूर्ण होने तक देश को नवीन ऊंचाइयों पर ले जाएगा।

पानी की अत्यधिक आवक से गांधी सागर के 12 गेट खुले

अस्त-व्यस्त हुआ आमजन का जीवन लौट रहा सामान्य की ओर

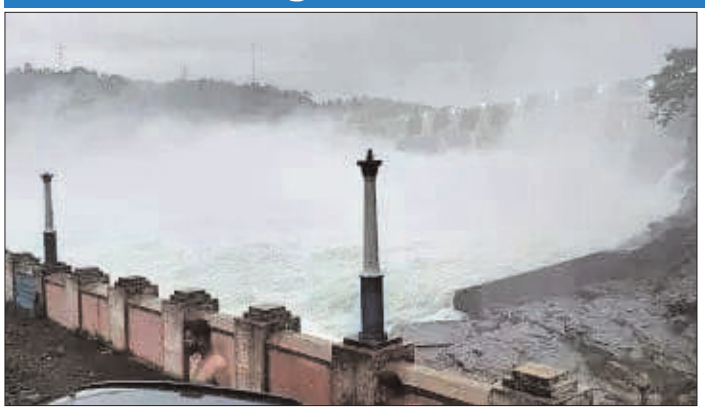

माही की गूंज, मंदसौर।

शुक्रवार से लगातार मंगलवार तक बारिश का दौर जारी रहा, जिसके बाद कुछ राहत आमजन को मिली है। इसके चलते जिले के कई नदी-नाले उफान पर आ गए। नदी-नालों में आए उफान की वजह से ग्रामीण क्षेत्रों में छोटी पुल पुलियाओं पर बाढ़ का पानी आने से शहरी क्षेत्र से संपर्क टूट गया। इससे ग्रामीणों को परेशानियों का सामना करना पड़ा। गांधीसागर डैम में पानी की अत्यधिक आवक होने की वजह से 12 गेट खोलना पड़े।

जिले में इन दिनों हुई बारिश में 5 इंच से भी ज्यादा बारिश दर्ज की गई है। जिले के सीतामऊ क्षेत्र में चंबल नदी किनारे बसे भगोर गांव में भी चंबल में पानी की आवक को देखते हुए लगभग 50 घरों प्रशासन ने खाली करवाया। मंदसौर में शिवना नदी पर बने कालाभाटा डैम के 5 गेट 6 फुट तक खोल दिए गए थे।

जारी किया था अलर्ट

चंबल नदी पर बनी एशिया की सबसे बड़ी मानव निर्मित झील गांधीसागर बांध के कैचमेंट एरिए में 4 लाख 16 हजार क्यूसेक पानी की आवक हुई। वहीं, बांध से 2 लाख 35 हजार क्यूसेक पानी छोड़ा गया जो अब धीरे-धीरे कम किया गया। जिसको लेकर बांध के निचले इलाकों में पूर्व में अलर्ट जारी किया गया था। मध्यप्रदेश में चंबल बेल्ट में हो रही बारिश की वजह से गांधी सागर बांध का जलस्तर लगातार बढ़ रहा है।

शिवना नदी में उफान से बिल्लोद नाहरगढ़ मार्ग का संपर्क टूटा

शिवना नदी पर ग्राम बिल्लोद नाहरगढ़ मार्ग पर बनी पुलिया जलमग्न होने से करीब 30 घंटे इस मार्ग पर आवागमन बन्द रहा। बिल्लोद पुलिया पर पानी होने से बिल्लोद, हींगौरिया बडा, खेडा, खुटी, खात्याखेडी का नाहरगढ़ से संपर्क टूट गया था। मौसम वैज्ञानिकों की मानें तो उत्तरी बंगाल की खाड़ी और निकटवर्ती ओडिशा तट के आसपास लो प्रेशर एरिया, साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम एक्टिव है और मानसून ट्रफ लाइन भी गुजर रही है। इसकी वजह से लगातार बारिश हो रही है। 18 सितंबर को दिन में सिस्टम गुजरात की तरफ मूव कर गया जिसके बाद बारिश की एक्टिविटी घाटी है।

'शिव' के गले तक आई 'शिवना'

माही की गूंज, मंदसौर।

पिछले दिनों हुई वर्षा में भगवान के 'शिव' के गले तक आकर 'शिवना' नदी ने भोलेनाथ का जलाभिषेक कर दिया। मंदसौर के विश्व प्रसिद्ध पशुपतिनाथ मंदिर शिवना नदी की बाढ़ से घिर गया था और शिवलिंग के चार मुख जलमग्न हो गए थे। गर्भगृह में करीब 4 से 5 फीट पानी भरा था।

मंदसौर जिल में भारी बारिश से प्रसिद्ध भगवान पशुपतिनाथ की अष्टमुखी मूर्ति के चार मुख पानी में डूब गए। रविवार दोपहर तक यही हालात थे। मंदिर परिसर में बीती रात करीब ढाई बजे से रविवार शाम तक गर्भगृह पानी से डूबा हुआ था। मंदिर के श्रद्धालुओं के अनुसार यहां 4 से पांच फीट पानी भरा है। दक्षिण-पश्चिमी मध्यप्रदेश में तेज बरिश का दौर तीन दिन से जारी है। मालवा इलाके में छोटी-बड़ी नदियां उफान पर हैं। बता मंदसौर की करें तो यहां बीती देर पशुपति नाथ मंदिर के किनारे से बहने वाली शिवना नदी में बाढ़ आ गई। पानी बढ़ते-बढ़ते घाटों को पार करते-करते मंदिर परिसर में जा पहुंचा। लगातार बढ़ते पानी से सारा मंदिर परिसर भर गया। इधर गर्भगृह में पानी पहुंचने लगा। रात करीब दो बजे भगवान पशुपतिनाथ के गले तक शिवना नदी पहुंच चुकी थीं। रात में मंदिर कमेटी के सदस्य व लोग यहां मौजूद थे। श्रद्धालु इसे शिवना नदी के द्वारा भगवान पशुपतिनाथ का जलाभिषेक करना बताते हैं। माना जाता है कि, हर वर्ष मानसून सीजन में बारिश के दौरान एक बार शिवना नदी का पानी शिवलिंग तक भगवान का जलाभिषेक करने पहुंचता जरूर है।

खेत के मकान में रह रही सास-बहु के साथ हुई लूट

स्वजन बोले एक लाख कीमती जेवर, पुलिस ने सत्तर हजार बताया

माही की गूंज, मंदसौर।

जिले में सिराली थाना क्षेत्र नगर से करीब 6 किलोमीटर की दूरी पर बसे महेंद्र गांव में सास और बहू के साथ दिनदहाड़े दो नकाबपोश लुटेरों ने जेवरात लूट की घटना को अंजाम दिया है। जेवर लूटकर मोटरसाइकिल से फरार हो गए। घटना के बाद बुजुर्ग महिला को सिराली सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया, जहां उनका प्राथमिक उपचार किया गया।

चाकू निकालकर छीनने लगे जेवर

मंगलवार को महेंद्र गांव से आधा किलोमीटर दूर खेत में निवास कर रहे गौर परिवार के यहां दो नकाबपोश युवक पहुंचे। खुद को बैंक वाला बताकर घर के पुरुषों के बारे में पूछा। जब वृद्ध महिला ने बताया कि घर के पुरुष सिराली गए हैं तो युवकों ने चाकू निकाल लिया और गहने छीनने लगे।

घर के बाहर मौजूद माया बाई ने लुटेरे युवकों से कहा वह मारपीट न करें, जो चाहिए वह ले लें। इसके बाद भी लुटेरे नहीं माने और उनके कान के दो सोने के चैन लगे टाप्स खींच लिए, जिससे उनके कान कट गया। साथ ही बदमाशों से छीना झपटी के दौरान न उनके बायें हाथ में चाकू से कट लग गया।

वृद्ध सास को बचाने आई उनकी बहू पुष्पा गौर के गले से भी बदमाशों ने मंगलसूत्र और उसमें लगा पैंडल छीन लिए। माया बाई ने पुलिस को घटनाक्रम बताते हुए बताया कि घटना को अंजाम देने के बाद लुटेरे करीब 200 मीटर दूर पेड़ के पास खड़ी की काले रंग की मोटरसाइकिल लेकर भाग गए।

घटना की सूचना के बाद थाना प्रभारी अमित भावसार घटनास्थल के लिए रवाना हो गए। महिला के स्वजनों ने बताया कि, लूटे गए सोने के जेवरों की कीमत करीब एक लाख रुपये बाजार मूल्य के हिसाब से आंकलन की जा रही है। पुलिस ने लूटे गए सोने के आभूषण की कीमत 70 हजार रुपए दर्ज किया है। पुलिस ने फरियादी माया बाई की शिकायत पर दो अज्ञात आरोपितों के खिलाफ धारा 394, 34 के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया है।

बस स्टैण्ड का सुविधा घर बंद, आमजन हो रहे परेशान

माही की गूंज, शाजापुर/अकोदिया।

नगर अकोदिया के सुंदरसी बस स्टैण्ड पर बना जन सुविधा घर गत माह की 31 तारीख से बंद पड़ा हुआ है। नगर प्रशासन उस पर कोई स्थाई व्यक्ति नहीं बैठा पा रहा है। जिसके कारण उसका उपभोग करने वाले उपभोक्ताओं को परेशान होना पड़ रहा है। पहले भोपाल के बुजुर्ग दंपत्ति यहां पर रहकर नियमित रूप से सुविधा घर को खोल कर रखते थे, लेकिन उनके जाने के बाद से ये सुविधा घर वीरान हालत में है। इसके आलावा इसी मार्ग पर बड़े-बड़े गड्ढे भी इस मार्ग की सुंदरता को बिगाड़ रहे हैं।

डेंगू के बढ़ते मामले पर स्वास्थ्य विभाग अलर्ट

माही की गूंज, रतलाम।

पिछले दिनों हुई तेज बारिश से गड्ढों और पोखरों में जमा पानी में पनपे मच्छरों का लार्वा खत्म होने से कुछ दिन की राहत है, लेकिन आगे खतरा बढ़ेगा। मानसून की विदाई का समय करीब आने के साथ ही जलजमाव वाले क्षेत्रों में डेंगू के मच्छर के लार्वा तेजी से बढ़ते हैं। स्वास्थ्य विभाग भी सितंबर व अक्टूबर माह को लेकर सर्वाधिक अलर्ट रहता है। नगर में डेंगू प्रभावित क्षेत्रों में फागिंग के साथ ही दवाओं का छिड़काव भी कराया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्र से मिले तीन मरीजों में पंचेड़ का 14 वर्षीय किशोर, सैलाना के आबांपाड़ा का 22 वर्षीय युवक, सेमलखेड़ा की तीन वर्षीय बालक शामिल है। इसके साथ ही इस वर्ष कुल मरीजों की संख्या 33 हो गई है।

स्वास्थ्य विभाग ने की गंबूसिया मछलियों की मांग

संख्या के मान से स्थिति नियंत्रण में दिखाई देती है, लेकिन जैसे-जैसे बारिश का दौर थमेगा, वैसे-वैसे मरीज बढ़ने लगते हैं। इससे निपटने के लिए मलेरिया विभाग ने मत्स्य विभाग से एक लाख गंबूशिया मछलियों की मांग की है। अभी छोटे गड्ढों में तो दवाई छिड़ककर लार्वा नियंत्रण किया जा रहा है, लेकिन बड़ी जल संरचनाओं के लिए गंबूसिया मछली ही मददगार सहायक होती हैं। ये मछलियां मलेरिया, डेंगू के मच्छरों के लार्वा को खा जाती हैं। विभाग जागरूकता को लेकर भी विशेष ध्यान दे रहा है। लोगों को मच्छरदानी का उपयोग करने, जलजमाव नहीं होने देने और पूरी बांह के कपड़े पहनने की हिदायत दी जा रही है। गांवों में स्वास्थ्य विभाग के अमले के आथ आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, आशा कार्यकर्ताएं भी नजर रख रही हैं।

शांति समिति की बैठक संपन्न

माही की गूंज, शुजालपुर।

शुजालपुर सिटी थाना पर गणेश स्थापना आयोजन, ईद मिलादुन्नबी जुलूस के आयोजन पर चर्चा के लिए शांति समिति के सदस्यों द्वारा की एक सामूहिक शांति समिति की बैठक आयोजित गई। जिसमें शुजालपुर एसडीएम सत्येंद्र सिंह, तहसीलदार, शुजालपुर सिटी थाना प्रभारी, शुजालपुर मंडी व एमपीईबी नगर पालिका से अधिकारी मौजूद रहे। बेथ में आयोजकों से चर्चा कर उन्हें शांतिपूर्वक त्यौहार मनाने की समझाइश दी गई।

11 करोड़ रुपए का अनाज हुआ खराब, भाजपा नेता पर दर्ज हुई एफआईआर

माही की गूंज, शाजापुर।

शाजापुर में करोड़ों रुपए का अनाज खराब होने के मामले में वेयर हाउस मालिक के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। आरोपी धुरंधर चौधरी के पिता रामेश्वर चौधरी भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य हैं।भाजपा नेता रामेश्वर चौधरी के निजी वेयर हाउस जेवीएस गोदाम और भागीरथ वेयर हाउस को वर्ष 2020-21 के गेहूं भंडारण के लिए सरकार ने अधिग्रहित किया था। इन वेयर हाउस में लगभग 35 हजार मेट्रिक टन गेहूं और चना रखा गया था। अनुबंध के अनुसार, दोनों उपज की सुरक्षा वेयर हाउस संचालक की जिम्मेदारी थी। लेकिन रामेश्वर चौधरी ने वेयर हाउस का गेहूं और चना हटाकर उसमें सीमेंट और प्याज का भंडारण कर लिया।

गोदाम को खाद्यान्न के लिए लाइसेंस प्रदान किया गया था, लेकिन संचालक ने सरकारी उपज को खराब कर गोदाम से हटा दिया गया। इस संबंध में जब मप्र वेयर हाउस संचालक ने शाजापुर कलेक्टर को शिकायत की, तो कलेक्टर ने पूरे मामले की जांच कराकर वेयर हाउस संचालक के खिलाफ एफआईआर के निर्देश दिए। शाजापुर पुलिस ने भागीरथ वेयर हाउस संचालक के रूप में भाजपा नेता रामेश्वर चौधरी के पुत्र धुरंधर चौधरी के खिलाफ एफआईआर दर्ज की। इस वेयर हाउस में लगभग 11 करोड़ का गेहूं और चना जो रखा था, वह खराब हो गया। उसकी जगह वेयर हाउस संचालक ने प्याज और सीमेंट भर दिया।

यहां स्थापित है अद्भुत द्विमुखी गणेश जी, एक ही मुर्ति में दो रूपो की अलग-अलग विधि से होती है पूजा

माही की गूंज, मंदसौर।

मंदसौर को जहां श्री पशुपतिनाथ महादेव मंदिर के कारण पहचाना जाता है। वहीं मंदसौर की घनी बस्तीं जनकूपुरा में स्थित गणपति चौक में प्राचीन श्री द्विमुखी चिंताहरण गणपति मंदिर है। यहां पाषाण युगीन द्विमुखी भगवान गणेशजी की मूर्ति है। सात फीट ऊंची इस मूर्ति में भगवान गणेशजी एक तरफ सेठजी के स्वरुप में हैं तो दूसरी तरफ पंचसुंडी रुप में हैं।

सात फीट ऊंचाई वाली श्री गणेशजी की खड़ी मुद्रा वाली इस अप्रतिम नयनाभिराम मूर्ति का स्वरुप अत्यंत ही सुंदर व कलात्मक है। मूर्ति के आगे का भाग पंचसुंडी रुप में और पीछेका स्वरुप श्रेष्ठी (सेठ)की मुद्रा को प्रदर्शित करता है। मस्तक पर सेठजी के समान पगड़ी व शरीर पर वस्त्र पहने हुए भगवान श्रीगणेश काफी आकर्षक स्वरुप में दर्शन दे रहे हैं। आगे व पीछे दोनों तरफ के पूजा के विधान भी अलग-अलग है। इस अनोखी मूर्ति के दर्शन के लिए दूर-दूर से अनेक दर्शनार्थी आ रहे हैं।

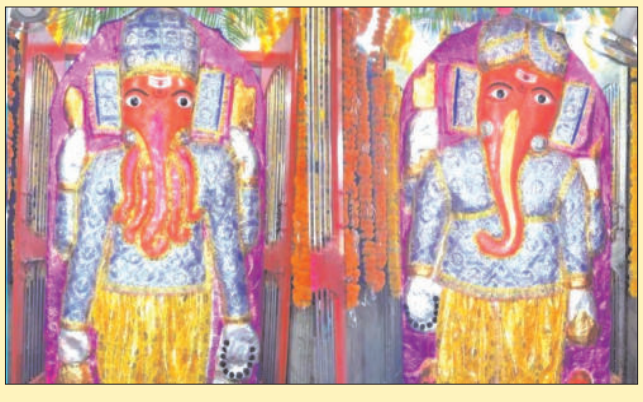

स्वप्न में दर्शन दिए तब जाकर नाहर सैय्यद तालाब से निकाली मूर्ति

मूर्ति का ज्ञात इतिहास लगभग 90 वर्ष पुराना है। हालांकि मूर्ति काफी प्राचीन हैं जो आक्रांताओं ने नाहर सैय्यद दरगाह के पास बने तालाब में फेंक दी थी। इस लिहाज से मूर्ति का इतिहास अर्वाचीन भी हो सकता है। प्रतिमा का प्राकट्य स्थल नाहर सैय्यद दरगाह के पास स्थित तलाई है। शहर के निवासी मूलचंद स्वर्णकार को स्वप्न में इस स्थान पर मूर्ति होने का आभास हुआ। स्वप्न की पुष्टि के लिए मूलचंद स्वर्णकार ने मौके पर जाकर देखा तो पत्थरों में दबी यह मूर्ति सामने दिखाई दी। मूलचंद स्वर्णकार को संवत 1986 में आषाढ़ सुदी पंचमी 22 जून 1929 को मूर्ति को प्रतिष्ठापित करने का प्रेरणात्मक आदेश प्राप्त हुआ। उन्होंने आषाढ़ सुदी 10 विक्रम संवत 1986 को शास्त्रोक्त विधि-विधान के साथ इस मूर्ति को पत्थरों के बीच से निकलवाकर धूमधाम से बैलगाड़ी में विराजित कर आगे बढ़ाया।

गणपति चौक में आकर रुक गई बैलगाड़ी, यहीं बना भव्य मंदिर

बुजुर्गों के अनुसार गणेशजी की मूर्ति को नरसिंहपुरा क्षेत्र में किसी उचित स्थान पर प्रतिष्ठापित करने हेतु बैलगाड़ी से ले जा रहे थे। उस समय नरसिंहपुरा जाने हेतु सुगम मार्ग जनकूपुरा, मदारपुरा होकर ही था। बैलगाड़ी जनकूपुरा में वर्तमान स्थान पर गणपति चौक पर आकर रुक गई। काफी कोशिश के बाद भी बैलगाड़ी एक इंच भी आगे नहीं बढ़ी। भगवान गणेशजी की इच्छा को सर्वोपरि मानकर धर्मालुजनों द्वारा इसी स्थान पर एकादशी को मूर्ति की विधिपूर्वक स्थापना कर दी गई। तब से यह स्थान गणपति चौक के नाम से जाना जाता है।

पंचतत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं पंचसुंडी श्रीगणेश

द्विमुखी मूर्ति के दोनों तरफ के मुख अलग-अलग रुप व भावमयी मुद्राएं प्रकट करते हैं। आगे के मुख में पांच सुंड है पीछे के मुख में एक सुंड व सिर पर पगड़ी धारण किया विशेष श्रृंगार है। जो भगवान श्री गणेशजी को श्रेष्ठीधर सेठ के रुप में अभिव्यक्त करता है। जनकूपुरा क्षेत्र के महानुभावों की अगुवाई व नगर वासियों के सहयोग से मंदिर को भव्य रुप दिया गया। वर्तमान में यह मंदिर मंदसौर के साथ ही समूचे अंचल के धर्मालुजनों की आस्था का केंद्र बन चुका है। प्रति बुधवार सायंकाल महाआरती होती है। मंदिर में अन्य देवी देवता की प्रतिमाएं भी स्थापित है।

मनोकामनाएं होती हैं पूर्ण

धर्मशास्त्र के उल्लेख के अनुसार प्रतिमा को पंचतत्वों से संबंधित माना गया है। आगे के मुख जिस पर पांच सुंड है उन्हें विघ्नहर्ता गणेशजी कहते हैं। पांचों सुंड की दिशा बांयी तरफ है पीछे के मुख की सुंड दाहिनी दिशा में हैं इसे संकट मोचन गणेशजी कहा जाता है। मान्यता है कि श्री द्विमुखी गणपति मंदिर में आने वाले दर्शनार्थियों की मनोकामनाएं पूर्ण होती है।

ऐसी विलक्षण मूर्ति के दर्शन करने दूर-दूर से दर्शनार्थी आते है व अपनी मन की कामनाएं पूरी होने की कामना करते हैं। जहां द्विमुखी चिंताहरण गणेशजी का मंदिर है। पहले इस स्थान को प्रचलित नाम इलाजी चौक के नाम से जाना जाता था जो अब गणपति चौक के नाम से प्रचलन में आ गया है।

प्रदेश में शुरू हुआ नई दिल्ली-मुंबई 8 लेन एक्सप्रेस वे, बढ़ेगी टोल की दरें

माही की गूंज, मंदसौर। साहिल अगवान

नई दिल्ली-मुंबई 8 लेन एक्सप्रेस-वे के मप्र के हिस्से में वाहनों का आवागमन 20 सितंबर से अधिकृत रूप से शुरू किया गया। प्रदेश के रतलाम, मंदसौर व झाबुआ जिले से गुजरने वाले एक्सप्रेस वे पर पहले दिन से ही टोल-टैक्स लगेगा। दिल्ली से मुंबई तक की कुल दूरी 1380 किलोमीटर

नेशनल हाईवे अथारिटी आफ इंडिया के एक्सप्रेस-वे एनई-4 की दिल्ली से मुंबई तक की कुल दूरी 1380 किलोमीटर है। इसमें मप्र के 244.5 किलोमीटर के हिस्से में रतलाम जिले में 90, झाबुआ जिले में 50.95 व मंदसौर में 102 किमी लंबा हिस्सा है।

मुंबई से दिल्ली के सफर में 12 से 13 घंटे

एक्सप्रेस-वे से मुंबई से दिल्ली के सफर में 12 से 13 घंटे लगेंगे। अभी करीब 22 घंटे लग जाते हैं। खास बात यह है कि रतलाम से मुंबई या दिल्ली के लिए समान रूप से छह से सात घंटे का समय लगेगा। 120 किमी की स्पीड से वाहन इस एक्सप्रेस वे पर चलेंगे और टू-व्हीलर को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। इससे ज्यादा की स्पीड पर चालान कटेगा। स्पीड पर नियंत्रण के लिए पूरे मार्ग पर सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं।

पीएम करने वाले थे लोकार्पण

एक्सप्रेस वे के मप्र के हिस्से का लोकार्पण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किए जाने की संभावना थी। इसके चलते जुलाई माह से एनएचएआई के अधिकारी तैयारी कर रहे थे, लेकिन अब बगैर किसी आयोजन के आवागमन चालू कर दिया गया।

इस तरह तय होगा टोल

एक्सप्रेस-वे पर टोल दर लागत पर आधारित होगी। जिस खंड में पुल-पुलियाए व इंटरचेंज ज्यादा होंगे वहां टोल ज्यादा लगेगा। दौसा वाले हिस्से के मान से कार व हल्के वाहनों के लिए टोल 2.20 रुपये से 2.25 रुपये प्रति किलोमीटर तक की दर हो सकती है। बड़े यात्री वाहन, ट्रक के लिए यह 7 से 7.35 रुपये तक होने की संभावना है। विभागीय स्तर पर दरों की जानकारी भी सार्वजनिक सूचना के जरिए दी जाएगी।

सबसे ज्यादा फायदा रतलाम को

एक्सप्रेस वे पर दिल्ली व मुंबई के मध्य रतलाम के होने से इसका सर्वाधिक लाभ मिलेगा। खास बात यह है कि रतलाम से धामनोद के समीप होकर व जावरा के भूतेड़ा के समीप इंटरचेंज होने से दो स्थानों से वाहनों की एक्सप्रेस वे पर आवाजाही हो सकेगी। इससे बांसवाड़ा, उज्जैन, आगर, इंदौर से आने वाले वाहन भी रतलाम या जावरा होकर ही निकलेंगे। रतलाम में बनने वाले मेगा इंडस्ट्रियल पार्क को भी एक्सप्रेस वे से जोड़ा जाएगा। इससे व्यापारिक व आर्थिक गतिविधियां भी बढ़ेंगी।

प्रोजेक्ट मैनेजर रविंद्र गुप्ता ने बताया कि, एक्सप्रेस वे पर वाहनों की आवाजाही 20 सितंबर से शुरू हो चुकी है। निर्धारित दरों के मान से ही टोल वसूली होगी। अलग-अलग सेक्शन में अलग-अलग दर है।

22 लाख से अधिक लोगों की मांग एक आवेदन पर हुई पूरी

7 लाख लोगों ने पाया जाति का प्रमाण

माही की गूंज, खरगोन।

म.प्र. शासन द्वारा 2010 में नागरिकों को एक स्थान पर नियत समय में सेवा प्रदान करने के उद्देश्य से सुशासन के लिए अधिनियम लाया गया था। इस अधिनियम का नाम भी लोक सेवा ही नाम रखा गया था। इस अधिनियम से संचालित होने वाले लोक सेवा केंद्रों के माध्यम से सुशासन की दिशा में बड़ा परिवर्तन आया है। सितंबर 2012 से प्रारंभ हुई पहल को इस माह में 11 वर्ष पूर्ण हुए हैं। 1 सितंबर 2012 से लोक सेवा केन्द्रों की स्थापना के बाद से आवेदन प्राप्त किए जाने लगे।

लोक सेवा के जिला प्रबंधक दीपक रावत ने जानकारी देते हुए कहा कि, वर्तमान में जिले में 10 लोक सेवा केंद्र स्थापित है। अधिनियम प्रारम्भ होने के बाद से अब तक 22 लाख 3 हजार 850 आवेदनों को सेवाएं दी गई है। इन केंद्रों पर कुल 24 लाख 47 हजार 783 आवेदन प्राप्त किये गए थे। इन केंद्रों से 7 लाख 45 हजार 148 आवेदकों को जाति के प्रमाण पाएं है। खरगोन जिला एक जनजातीय जिलों की श्रेणी में जाना जाता है। इस लिहाज से यहां की जनजातीय जनता को सेवा का पूरा पूरा लाभ प्रदान किया गया। जाति की पहचान के लिए कुल 8 लाख 28 हजार 877 लोगों ने मांग आवेदन देकर की गई थी। अब शासन ने निर्धारित किया है कि लोगों को 40 नहीं बल्कि 20 रुपए में ही सेवा प्रदान की जाए।

24 विभागों की 264 सेवाएँ हुई शामिल

लोक सेवा केन्द्रों के माध्यम से वर्तमान में 24 विभागों की 2 हजार 564 सेवाएँ शामिल है। इसके माध्यम से किसानों को कृषि की सेवाएँ, महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाएँ, विद्यार्थियों को जाति व निवासी प्रमाण पत्र आदि की सेवाएं प्राप्त हुई है। 24 विभागों में पुलिस, परिवहन, महिला बाल विकास, श्रम विभाग आदि है।

पंचेड़ में हुई युवक की हत्या का हुआ खुलासा, हत्या में शामिल एक नाबालिग सहित तीन लोग गिरफ्तार

मृतक ने आरोपी के नाबालिग भाई से किया था अप्राकृतिक कृत्य

माही की गूंज, रतलाम।

जिले के नामली थाना क्षेत्र के ग्राम पंचेड में हुई युवक की हत्या के मामले को पुलिस ने 28 घण्टों के भीतर सुलझाते आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने हत्या में शामिल एक नाबालिग समेत तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार मृतक पर तीन वर्ष पूर्व एक बालक के साथ अप्राकृतिक कृत्य का आरोप था, इसी का बदला लेने के लिए आरोपियों ने उसकी हत्या कर दी। पुलिस अधीक्षक राहूल कुमार लोढा ने प्रेसवार्ता आयोजित कर मामले की विस्तार से जानकारी दी।

इस मौके पर एएसपी राकेश खाखा, एसडीओपी ग्रामीण अभिलाष भलावी भी मौजूद थे। एसपी लोढा के मुताबिक 18 सितम्बर को पंचेड निवासी आबिद पिता सुल्तान मंसूरी की चाकूओं से गोद कर हत्या कर दी गई थी। पुलिस ने इस मामले में आरोपी त्रिभुवन चौहान,आशुतोष उर्फ भोला और एक नाबालिग बालक के विरुद्ध हत्या का प्रकरण दर्ज कर आरोपियों की तलाश प्रांरभ की थी। एसपी लोढा ने बताया कि, थाना प्रभारी नामली धर्मेन्द्र शिवहरे के नेतृत्व में गठित टीम को मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर तीनों आरोपियों को निंबाहेडा-भीलवाडा हाईवे पर चित्तौडगढ टोल नाके के पास से गिरफ्तार कर लिया गया।आरोपियों की गिरफ्तारी के बाद जब पुलिस ने उनसे पूछताछ की तो पता चला कि, मृतक आबिद मंसूरी ने विगत 16 मई 2020 को हत्या के आरोपी नाबालिग बालक के आठ वर्षीय छोटे भाई के साथ अप्राकृतिक कृत्य किया था। मृतक आबिद खुद भी उस समय 17 वर्ष का था इसलिए पाक्सो एक्ट में प्रकरण दर्ज होने के बाद भी नाबालिग होने के आधार पर उसे शीघ्र जमानत मिल गई। लेकिन इसी बात से आरोपीगण मृतक से रंजिश रखते थे। हत्या के आरोपी नाबालिग बालक ने अपने दोनो साथियों त्रिभुवन और आशुतोष उर्फ भोला को साथ लेकर 18 सितम्बर को आबिद पर चाकूओं से हमला कर दिया,जिससे उसकी मौत हो गई थी।

अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई से, गुमटी संचालक हुए बेरोजगार

माही की गूंज, शुजालपुर।

अवंतीपुर बडोदिया बस स्टैंड पर संचालित की जा रही राजस्व की जगह में गुमटियों को सोमवार और मंगलवार को हुई अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई में हटवा दिया। फुटकर, गुमटी व्यापारियों ने बताया कि, प्रशासन की अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई में हमारी गुमटिया हटवा दी गई जिससे हमारे रोजगार, हमारे धंधे चौपट हो गए हैं। क्योंकि जीविकोपार्जन के लिए हमारे पास सिर्फ यही एक धंधा था। अब हमारे परिवार को चलाना मुश्किल हो रहा है। जहां गुमटिया रखी हुई थी वह जगह राजस्व विभाग कि थी। वहां पर गुमटी वालों को अश्वासन दिया था कि आप को गुमटियो कि जगह बनने के बाद पक्की दुकाने दे दी जायेंगी। पंचायत द्वारा यहा आश्वासन दिया गया था लेकिन पंचायत द्वारा दुकाने बनाकर प्रत्येक दुकाने लाखों से उपर सक्षम लोगों को निलामी मे दे दी, जिसमें हम गरीब गुमती वालों को दुकाने नहीं मिली। यह निलामी अवेध रूप से कि गई, अगर वेध होती तो ग्राम के आम नागरिक ने ग्राम पंचायत से सुचना के अधिकार के तहत सम्पूर्ण दुकानों का लेखा जोखा मांगा था जो कि पंचायत द्वारा नहीं दिया गया। अतः जिला न्यायधीश व प्रशासन से मांग है कि, या तो पंचायत द्वारा बनी दुकानों का रिकार्ड लिया जावे व इन दुकानों कि कुल निलामी कि राशि का रिकार्ड व पेसा कहा खर्च किया गया या तो गुमती वालो को पंचयात द्वारा बनी पक्की दुकाने दि जाए। क्योंकि गुमटी वालों का उसी से रोजगार व घर परिवार चलता है ओर गुमटी वाले अपने इसी रोजगार पर आश्रित है। इसी विषय को लेकर हम समस्त छोटे फुटकर व्यापारियों ने मिलकर तहसीलदार को आवेदन के माध्यम से अवगत अवगत कराया था।

वही इस पूरे मामले में तहसीलदार का कहना है कि, पूर्व से ही छोटी गुमटिया बस स्टैंड की सरकारी जगह पर लगी हुई थी। जिससे आवागमन में एवं बाजार लगने में या बस पलटने मै परेशानी आ रही थी। इसलिए बस स्टैंड को अतिक्रमण से मुक्त करवाया गया है। दुकान संचालकों को पूर्व में नोटिस के माध्यम से सूचना दे दी गई थी।

अति वृष्टि से प्रभावित ग्रामों में मलेरिया से बचाव हेतु बताए जा रहे है उपाय

माही की गूंज, बड़वानी।

जिला मलेरिया अधिकारी अब्दुल वसीम शेख के निर्देशन में जिला मलेरिया सलाहकार किरतसिंह कवचे एवं टीम के सदस्य एम. पी.डब्ल्यू. सुनील मोयदे, शादिक अली, फ़ील्ड वर्कर राघवेंद्र कौरव, हेमन्त बड़वानी के द्वारा बाढ़ प्रभावित ग्राम छोटी कसरावद, भीलखेड़ा, पिछोडी, नर्मदा फलिया पिछोडी, पेंड्रा, कल्याणपुरा, एकलवारा का भ्रमण कर रेपिड फीवर सर्वे, लार्वा सर्वे, लार्वा नष्टीकरण व पानी से भरे गड्ढों में टेमोफोस एवं स्थाई गड्ढों में गम्बूजिया मछली का संचयन किया गया हैं। फील्ड स्टाफ़ से मलेरिया एवं अन्य वाहक जनित रोगों की जानकारी ली, व टीम के सदस्यों ने जनमानस को डेंगू मलेरिया बीमारी के प्रति जागरूक किया गया। साथ ही ग्रामवासियों को मलेरिया नियंत्रण के बारे में विस्तार से समझाइश देते हुए ग्रामवासियों को लार्वा को नष्ट करने के उपाय बताये। इसके साथ ही मलेरिया की रोकथाम के लिए ग्रामवासियों से चर्चा कर बताया कि मलेरिया मादा एनाफिलीज मच्छर के काटने से होता हैं तथा डेंगू/चिकुनगुनिया मादा एडीज मच्छर के काटने से होता हैं, ये दोनों मच्छर साफ पानी में पनपते हैं इसलिए हमें अपने घर एवं घरों के बाहर साफ सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए साथ ही प्रति सात दिवस में हमें पानी के बर्तनों कूलर इत्यादि को साफ करके पानी भरना चाहिए हमारी जागरूकता से ही हम मलेरिया, डेंगू से बच सकते है तथा वेक्टर जनित रोगों की सतत निंगरानी रखने से बीमारियों को नियंत्रित किया जा सकता हैं मलेरिया उन्मूलन के बारे चर्चा की गई मच्छरों से बचने के अन्य उपाय जैसे मच्छरों को भगाने वाली क्रीम का शरीर के खुले स्थान पर लेप करें तथा रात को सोने से पहले नीम की पत्तियों का धुँआ करे, पूरी अस्तिन के कपड़े पहने व मच्छरदानी का उपयोग करें तथा मच्छरों के प्रजनन स्थलों को नष्ट करने के उपाय बताएं गये पानी से भरे स्थानों में जला हुआ इंजीन का ऑयल डालें या मिट्टी का तेल डालें जिससे मच्छरों के लार्वा को नष्ट किया जा सकता है।

गर्भवती महिला को मिला पति का साथ

माही की गूंज, बड़वानी।

पुलिस अधीक्षक पुनीत गहलोत के निर्देशन में कोतवाली टीआय बलदेव मुजाल्दे व पुलिस परिवार परामर्श केंद्र की टीम के द्वारा बिछड़े परिवार को मिलाया। आवेदिका निवासी हरिबड, हाल मुकाम भागसुर ने पुलिस परिवार परामर्श केंद्र में आवेदन देकर गुहार लगाई की में गर्भवती हूं, मेरे पति व मेरा विवाद होने से में मायके में रह रही हूं। मेरे पति को बुलाकर समझाइश दी जाए तथा मेरा घर बसाया जाए। इस पर दोनों पक्षों को बुलाकर काउंसलिंग की गई।

जिसमें थाना प्रभारी बलदेव सिंह मुजाल्दे के द्वारा समझाया गया कि, पारिवारिक संबंधों को मजबूत और खुशहाल बनाने के लिए परिवार के प्रत्येक सदस्य को मिलजुल कर साथ-साथ रहना चाहिए। अच्छे बुरे समय में एक दूसरे का साथ देना चाहिए। पारिवारिक रिश्तों में हर सदस्य को तनाव मुक्त रहना चाहिए। पति-पत्नी में एक दूसरे के साथ सुरक्षित महसूस हो ऐसा करें। भरोसा रखें तथा वादा निभाएं। दोनों एक दूसरे की मदद करे, सम्मान करे, प्रेम से रहे, एक दुसरे पर भरोसा करना चाहिए। रिश्ते में संदेह या शक सबसे खतरनाक होता है ,जो कि रिश्ते को खत्म कर सकता है। इसलिए समझदारी से रहे दोनों अच्छे से रहे।

काउंसलर श्रीमती अनीता चोयल के द्वारा समझाया कि, अब गर्भ मे पल रहे बच्चे के जन्म और पालन पोषण का सोचो। झगड़े से आप दोनों के साथ-साथ बच्चे के स्वास्थ्य पर भी गलत असर पड़ेगा। घर में दोनों मिलजुल कर रहे हैं। एक दूसरे की गलती ढूंढने की बजाय एक दूसरे के कामों की तारीफ करें। दोनों एक दूसरे को समझे। प्रधान आरक्षक आशा डुडवे के द्वारा भी समझ गया। इस अवसर पर दोनों ने आपसी सहमति से आपस में स्वेच्छा से आपसी समझौता नामा पेश किया। इस अवसर पर आरक्षक गीता कनेश, जमना बघेल उपस्थित थे।

ग्रामीण आजीविका मिशन की मदद से मजदूरी करने वाली सविता बनी व्यवसायी

माही की गूंज, रतलाम। कभी मजदूरी करने वाली रतलाम जिले की सविता चौहान राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन की मदद से सफल व्यवसायी बन गई है। रतलाम से 20 किलोमीटर दूर कलोरीखुर्द गाँव की रहने वाली सविता चौहान पहले मजदूरी करती थी। ग्रामीण आजीविका मिशन के महिला स्व-सहायता समूह की जानकारी मिलने पर वे भी समूह की महिलाओं के साथ जुड़ गईं। शुरूआत में सविता ने छोटी बचत करना शुरू की। इसके बाद सविता और उनके समूह की महिलाओं को अचार बनाने की ट्रेनिंग दिलाई गई। सविता ने एक लाख रुपए का लोन लिया और अचार बनाने का काम शुरू किया। इस वर्ष उनके समूह को 50 किलोग्राम अचार बनाने का ऑर्डर मिला है।

उन्होंने बताया कि, पिछले वर्ष सविता ने 2 कि्वंटल आम, 50 किलोग्राम लहसुन, 10 किलोग्राम नींबू और 5 किलोग्राम मिर्च का अचार विक्रय किया। उनका समूह लगातार प्रगति कर रहा है। कक्षा आठवीं तक पढ़ी सविता चौहान आगे भी पढ़ने की इच्छा रखती हैं। उनके 2 बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ाई कर रहे हैं। सविता ने अचार व्यवसाय के लिए मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना का सहारा लेकर अब दो लाख रुपए का व्यक्तिगत ऋण भी प्राप्त कर घर पर ही किराना की छोटी दुकान भी खोल रखी है। उनके पति जो पहले मजदूरी किया करते थे, का भी भवन निर्माण में सेंटरिंग का काम शुरू हो गया है।

सामाजिक संस्थाओं की राहत सामग्री पहुंची प्रभावित क्षेत्रों में

लायंस क्लब और अजीज प्रेमजी संस्था आगे आये प्रभावितों के लिए पहुँचाई राशन सामग्री

माही की गूंज, खरगोन।

पिछले दिनों हुई भारी वर्षा से प्रभावित जनजीवन की व्यवस्थाएं बहाल होने लगी है। मंगलवार को प्रभावित क्षेत्र का भ्रमण करने के बाद कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा द्वारा तुरंत समाजिक संस्थाओं की बुलाई गई बैठक के प्रयास सार्थक होने लगे हैं। बुधवार को लायंस क्लब और अजीज प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा प्रशासन को राहत सामग्री प्रदान कर दी गई।

कसरावद एसडीएम अग्रिम कुमार ने बताया कि, बुधवार दोपहर में लायंस क्लब द्वारा प्रदाय राहत सामग्री का भट्याण वितरण भी प्रारम्भ कर दिया गया है। इनके अलावा अजीज प्रेमजी फॉउंडेशन द्वारा 190 परिवारों को राहत किट प्रदान करने के लिए सामग्री प्रशासन को दी गई है।

एसडीएम कुमार ने आगे बताया कि मंगलवार और बुधवार से सर्वे दलों के अलावा आधारभूत संरचनाओं से जुड़े विभाग भी अपने-अपने कार्यों में जुट गए हैं। एमपीईबी ने भी कई गांवों में विद्युत सप्लाई चालू कर दी गई है। इसके अलावा पीडीएस दुकानों पर राशन पहुचाने की तैयारी की जा चुकी है। वहीं पशुपालन और पीएचई विभाग द्वारा भी पेयजल व पशुओं के उपचार आदि कार्यों में जुट चुके हैं। एसडीएम कुमार ने सर्वे दलों को 2 दिनों में सर्वे रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिए हैं। उनके सख्त निर्देशानुसार दलों में शामिल अमले को नुकसानी के फोटो, वीडियो अनिवार्य रूप से पंचनामें के साथ प्रस्तुत करना होगी।

दलों को ये भी है निर्देश और ये जुटे है सर्वे में

सर्वे दलों को दिए आदेश में कहा गया कि, सभी तरह के निर्धारित प्रारूप में जानकारी भरकर हस्ताक्षर करेंगे। क्षति पत्रक में नुकसानी की पूरी जानकारी भरना होगी। इसमें परिवार के मुखिया के नाम, फसल क्षति के सम्बंध में भूमिस्वामी नाम तथा पंचनामें में सर्वे दलों के अलावा ग्रामवासियों, सरपंच के भी हस्ताक्षर कराएंगे। सर्वे दल में अधिकांश नोडल अधिकारी कृषि विभाग के हैं। इनके अलावा सहायक नोडल अधिकारी, सचिव, रोजगार सहायक, शिक्षक, कोटवार, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और उपयंत्रियों को शामिल किया गया है।

माही की गूंज
बेबाकी के साथ..सच
एजेंसी देना है
झाबुआ जिले में
रंभापुर, मदरानी, झकनावदा, खवासा, बरवेट, राणापुर
अलीराजपुर जिले में
चंद्रशेखर आजाद नगर (भाबरा), सौंडवा, कट्ठीवाड़ा, छकतला, चांदपुर, बोरी
संपर्क - 9589882798, 9981318651

क्षेत्र में अतिवृष्टि से जनजीवन अस्त-व्यस्त, कई मकान तथा पेड़ हुए धराशाई

माही की गूंज, आम्बुआ।

आम्बुआ तथा आसपास के क्षेत्र में शुक्रवार शाम से मंगलवार तक हुई बारिश से क्षेत्र में जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया। नदी-नाले उफान पर आए, खेतों में खड़ी फसले तथा कई पेड़ जमीन पर आ गिरे। ग्रामीण क्षेत्र अडवाड़ा में एक कृषक का मकान धराशाई हो गया जिसमे किसी तरह की जनहानि नहीं हुई। पटवारियों की हड़ताल के कारण मौका मुआयना तथा नुकसानी का आकलन नहीं हो पा रहा है। वर्षा तथा हवा का क्रम अभी तो थमा है, वही अधिक वर्षा के कारण फसलों को नुकसान भी हुआ है।

हमारे संवाददाता ने इस भीषण जल वृष्टि के बीच ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर जानकारी प्राप्त की। जिसमे पता चला कि, विगत दिनों मूसलाधार तथा रुक-रुक कर हो रही वर्षा तथा तेज हवा के कारण आम्बुआ से आजाद नगर के बीच सड़क किनारे तथा आम्बुआ हाई स्कूल प्रांगण में तथा बोरझाड़ में कई पेड़ उखड़ कर जमीन पर गिर गए।

ग्रामीण क्षेत्र अडवाड़ा में जाने पर पता चला कि, यहां के कृषक छतरसिंह पिता भूचर पटेल फलिया का मकान धराशाई हो गया। 17 सितंबर की सुबह लगभग 5 बजे जब परिवार के 8 सदस्य जिसमें पति-पत्नी तथा 6 बच्चे सोए हुए थे कि मकान के ऊपर लगी लकड़ी की बल्ली के टूटने की आवाज आई, जिसे सुनकर सब भागे मगर एक छोटी लड़की जो की एक वर्ष की थी खाट पर छूट गई, जिस पर मलवा गिरा तभी परिजनों ने दौड़कर उसे निकाला, जिसको मामूली चोट आई होकर वह सुरक्षित है। मकान में भेड़ मवेशी आदि को निकाला गया कोई जन हानि तो नहीं हुई। मगर घर में रखा खाद्यान्न, कपड़े, बिस्तर आदि गृहस्थी का सामान भीग कर खराब हो गया। पीड़ित परिवार समीप रह रहे अपने भाई के घर में शरण लिए हुए हैं।

इसी क्रम में आम्बुआ पंचायत क्षेत्र के वार्ड क्रमांक 2 में स्थित ठाकुर परिवार की श्रीमती विलम कुंवर पति कालू सिंह ठाकुर का मकान गिरा तथा ग्रामीण क्षेत्र मोरी फलिया में भी मकान गिरने की सूचना प्राप्त हुई। घटना की सूचना दूरभाष पर तहसीलदार एवं पटवारी को दी गई मगर पटवारियों की हड़ताल होने के कारण मौका पंचनामा तथा नुकसानी का आकलन नहीं हो सका है। क्षेत्र में अभी कहीं-कहीं वर्षा का क्रम जारी है तथा जारी रहने की आशंका व्यक्त की जा रही है। इस बारिश से नदी, तालाब, जलाशय में जलस्तर बढ़ने की उम्मीद जताई जा रही है। इधर इस तेज वर्षा तथा हवा के कारण बिजली व्यवस्था भी चरमरा गई थी, घंटो बिजली गुल रहने से अनेक परेशानियां आमजन के समक्ष उठ खड़ी हुई थी। अब वर्षा का क्रम रुकने के बाद सारी स्थतियां सामान्य होने की ओर अग्रसर है।

प्रारंभिक शिक्षा के लिए संचालित छात्रावासों की रैंकिंग में विकासखण्ड का छात्रावास प्रथम स्थान पर

माही की गूंज, जोबट।

राज्य शिक्षा केंद्र, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा प्रदेश में प्रारंभिक शिक्षा के लिए संचालित छात्रावासों की सत्र 2022-23 की रैंकिंग जारी की गई। जिसमें सीहोर जिले ने प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। वहीं अलीराजपुर जिले के जोबट विकास खण्ड का कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय बड़ागुडा छात्रावास प्रथम स्थान पर है।

संचालक राज्य शिक्षा केंद्र धनराजू एस ने बताया कि, छात्रावासों के शैक्षिक प्रदर्शन को बेहतर बनाना शासन की प्राथमिकता है। इस रैंकिंग प्रणाली को विकसित करने का मुख्य उद्देश्य रहवासी सुविधाओं के साथ छात्रावासों में अध्ययन-अध्यापन की बेहतर व्यवस्थाओं हेतु स्वस्थ प्रतिस्पर्धा जागृत करना है। छात्रावासों के प्रदर्शन एवं कार्यक्षमता के मानकों पर रैंकिंग जारी की गई है। रैंकिंग में स्वीकृत छात्रावासों की कार्यक्षमता के लिए 20 अंक, स्वीकृत सीटों पर नामांकन के लिए 20 अंक, छात्रावासी बच्चों के राष्ट्रीय मींस कम मेरिट छात्रवृत्ति में प्रदर्शन के लिए 20 अंक, ओलंपियाड में प्रदर्शन के लिए 20 अंक एवं वार्षिक परीक्षा परिणाम के लिए 20 अंक निर्धारित किए गए हैं। इस तरह कुल 100 अंकों में यह रैंकिंग तैयार की गई है।

कार्यक्षमता एवं प्रदर्शन के आधार पर जारी रैंकिंग के अनुसार सीहोर जिले ने प्रदेश भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। वहीं रायसेन, देवास, डिंडोरी, मंडला, छिंदवाड़ा, अलीराजपुर, बड़वानी, इंदौर एवं धार क्रमशः प्रथम दस शीर्ष जिलों में हैं। इसके साथ ही प्रदेश भर के छात्रावासों की भी रैंकिंग जारी की गई है। जिसमे कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय बड़ागुडा छात्रावास की बालिका ने राष्ट्रीय मेरिट कम मिन्स परीक्षा में 5 बच्चो का चयन हुआ था। वही पर इंग्लिश ओलम्पियाड में 1 बच्चे का चयन हुआ था।

372 लीटर अंग्रेजी शराब के साथ होण्डा सिटी कार पुलिस ने की जप्त

माही की गूंज, अलीराजपुर/आम्बुआ।

पुलिस अधीक्षक अलीराजपुर राजेश व्यास ने बताया कि, आगामी विधानसभा सामान्य निर्वाचन 2023 निष्पक्ष एवं पारदर्शी निर्वाचन को दृष्टिगत रखते हुए अलीराजपुर पुलिस के द्वारा विधानसभा सामान्य निर्वाचन 2023 निर्विघ्न, भयमुक्त वातावरण में शांतिपूर्ण संपन्न कराए जानें के उददेश्य से संपूर्ण जिलें में अवैध शराब व्यवसाय में लिप्त असामाजिक तत्वों की गतिविधियों पर सूक्ष्मता से निगाह रखी जा रही थी। इसी क्रम में 20 सितम्बर की दरम्यानी रात्रि मे आम्बुआ पुलिस टीम के द्वारा वाहन चैकिंग के दौरान बडी मात्रा मे अवैध शराब जप्त करने मे सफलता प्राप्त की है।

आम्बुआ पुलिस टीम को रोड पेट्रोलिंग के दौरान सूचना मिली कि, ग्राम जवानिया तरफ से एक सफेद रंग की होण्डा सिटी कार अवैध शराब परिवहन कर ग्राम झीरण के रास्ते से ग्राम टैमाची तरफ जा रही है। सूचना पर थाना प्रभारी आम्बुआ उप निरीक्षक योगेन्द्र मण्डलोई एवं अधीनस्थ टीम के द्वारा वाहन की घेराबंदी करते हुए ग्राम झीरण पहुंचे नाकेबंदी लगाई गई। तभी ग्राम जवानिया तरफ से एक सफेद रंग की होण्डा सिटी कार क्रमांक जीजे 03 सीए 3996 कार झीरण तरफ आ रही थी। तभी उक्त वाहन के चालक के द्वारा पुलिस टीम को देखकर दूर से ही वाहन को छोडकर अंधेरे का फायदा उठाकर भाग गया। पुलिस टीम के द्वारा वाहन के पास जाकर वाहन को चेक करते वाहन मे 31 पेटी बीयर की रखी होना पाया गया, जो अवैध रूप से परिवहन कर ले जाई जा रही थी। आम्बुआ पुलिस टीम के द्वारा उक्त वाहन को अपनें कब्जे मे लेते हुए विधिवत कार्वाई करते हुए अज्ञात आरोपी वाहन चालक के विरुद्ध थाना आम्बुआ अपराध क्र. 260/2023 धारा 34(2), 46 आब. एक्ट का पंजीबद्ध कर 31 पेटी माउण्ट बीयर कुल 372 बल्क लीटर शराब कीमत 89 हजार 280 रुपए तथा अवैध शराब परिवहन में प्रयुक्त होण्डा सिटी कार कीमती 5 लाख रुपए का जप्त कर, प्रकरण को जांच में लिया जाकर शराब परिवहन के संबंध में जांच की जा रही है।

उपरोक्त कार्रवाई मे उप निरीक्षक योगेन्द्र मण्डलोई थाना प्रभारी आम्बुआ, सउनि मनीष, आर प्रेम, आर रोशन, आर दिलीप एवं आर राकेश का सराहनीय योगदान रहा है।

पुलिस अधीक्षक अलीराजपुर राजेश व्यास के द्वारा बताया गया कि, संपूर्ण जिलें में अवैध शराब व्यवसाय में लिप्त असामाजिक तत्वों की गतिविधियों पर लगातार पुलिस की नजर बनी हुई है। अवैध शराब मे लिप्त असामाजिक तत्वों पर आगे भी प्रभावी कार्रवाई जारी रहेगी।

प्रथम पूज्य श्री गणेशोत्सव का शुभारंभ

माही की गूंज, आम्बुआ।

गौरीसुत भगवान भोलेनाथ के पुत्र, देवताओं में प्रथम पूज्य लंबोदर, एकदंत, रिद्धि-सिद्धि के दाता भगवान श्री गणेत्सव का शुभारंभ धूमधाम के साथ प्रारंभ हुआ। सार्वजनिक गणेत्सव पांडालों तथा घरों परिवारों व्यापारिक प्रतिष्ठानों में स्थापित किया गया।

देवताओं में प्रथम पूज्य मूसक पर सवार श्री गणेश जी की मूर्ति की स्थापना पर कई जगह जुलूस निकाला गया। हालांकि कुछ स्थान पर बारिश ने व्यवधान भी डाला मगर श्री गणेश जो की बुद्धि के देवता होकर विघ्नहर्ता श्री गणेश ने सभी विघ्नों से दूर कर कार्यक्रम का शुभारंभ कराया। आम्बुआ में बाल शिव भक्त मंडल के बच्चों ने भी शंकर मंदिर प्रांगण में हथिनी नदी तट पर श्री गणेश जी की स्थापना विधि विधान के साथ की गई। यदि मौसम खुला रहा तो आगामी 10 दिनों तक विभिन्न प्रकार के खेल कूद भजन कीर्तन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना है। कार्यक्रम में भाग लेने वाले विजेताओं को बाल शिव भक्त मंडल की तरफ से प्रमाण पत्र तथा विभिन्न प्रकार के पुरस्कारों से पुरस्कृत भी किया जाएगा।

मुख्यमंत्री लाडली बहना आवास योजना के फॉर्म भरने हेतु भीड़ उमड़ी

माही की गूंज, आम्बुआ।

मध्य प्रदेश शासन के मुखिया तथा बच्चों के मामा बहिनों के भैय्या शिवराज सिंह चौहान जो कि विगत महीना में विभिन्न घोषणाएं कर चुके हैं तो कई घोषणाएं धरातल पर उतर चुकी है। विगत माह लाडली बहना योजना के बाद अब आवास हीन बहनों हेतु मुख्यमंत्री लाडली बहना आवास योजना प्रारंभ हो रही है। जिसके फॉर्म भरना प्रारंभ हो गए हैं बुधवार को आम्बुआ पंचायत में महिलाओं की भारी भीड़ देखी गई।

विगत दिनों रक्षा बंधन पर प्रदेश के मुखिया ने लाडली बहना आवास योजना की घोषणा की तथा आवासहीन बहिनों हेतु पक्के मकान बनाने हेतु मुख्यमंत्री लाडली बहना आवास योजना के फॉर्म भरना प्रारंभ कराए गए। 18 सितंबर को इस योजना संबंधी फॉर्म भरने हेतु चाहे गए दस्तावेज आधार कार्ड, परिवार आईडी, बैंक खाते की जानकारी, मुख्यमंत्री लाडली बहना प्रमाण पत्र की फोटो कॉपी आदि के साथ फॉर्म भरने कार्य कराया गया। सुबह से शाम तक पंचायत भवन पर महिलाओं की भीड़ जमा रही इधर बिजली की लुका छुपी के कारण दस्तावेजों की फोटो कॉपी करने में भारी मशक्कत करना पड़ी। महिलाओं को उम्मीद है कि उनके लाडले भैय्या शिवराज सिंह ने जिस तरह एक हजार तथा अब एक हजारों दो सौ पचास रुपए खातो में डाले हैं उसी तरह अति शीघ्र आवास भी स्वीकृत कराकर बहनों को पक्का मकान देंगे।

आगामी त्यौहारों के मद्देनजर शांति समिति की बैठक संपन्न

चतुर्दशी, ईद-मिलादुन्नबी त्यौहार के सम्बन्ध में चर्चा की गई। शांति समिति की बैठक में सरपंच पेमला गणावा, सरपंच केवन गणावा, सरपंच मासम सरपंच तेरसिंह, पूर्व सरपंच निलेश गणावा, पुलिस स्टाफ, प्रधान आरक्षक उदलिया जमरा, आरक्षक जितेंद्र नरगावे, आरक्षक भारत

माही की गूंज, आम्बुआ।

आम्बुआ पुलिस थाना प्रांगण में थाना प्रभारी योगेंद्र मंडलोई की अध्यक्षता में शांति समिति तथा सुरक्षा समिति की संयुक्त बैठक का आयोजन रखा गया। जिसमें आगामी दिनों में आ रहे धार्मिक आयोजन जिसमें श्री गणेश उत्सव, तेजा दशमी, डोल ग्यारस, अनंत चतुर्थी, गणेश विसर्जन तथा मिलादुन्नबी के कार्यक्रम शांतिपूर्वक मनाए जाने पर विचार विमर्श किया गया। कस्बे की याता-यात व्यवस्था, बाजार तथा अन्य दिनों में दो पहिया वाहन चालकों की हुड़दंग पर अंकुश लगाने रात्रि गश्त आदि अनेक तरह के प्रस्ताव सुझाव दिए गए। बैठक में पत्रकार संघ अध्यक्ष गोविंदा महेश्वरी, असलम खान, साजिश शेख, वैभव जाधव, सरपंच रमेश रावत, महेंद्र सिंह रावत, हासिम अली बोहरा, अमान पठान, शाहिद कुरेशी, चांद मोहम्मद मकरानी आदि उपस्थित रहे।

माही की गूंज, उदयगढ़।

पुलिस अधीक्षक राजेश व्यास, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अलीराजपुर, एसडीओपी, राजस्व जोबट के निर्देशसानुसार थाना उदयगढ़ प्रांगण में शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। जिसमे थाना प्रभारी सीएस बघेल द्वारा त्योहार गणेश प्रतिमा स्थापना, गणेश विसर्जन, ढोल ग्यारस, ईद मिलाद नबी व अन्य त्योहार शांति पूर्ण व सुरक्षित मानने की अपील की गई। शांति समिति की बैठक में समिति के सदस्य, गणमान्य नागरिक, जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

माही की गूंज, बरझर।

पुलिस चौकी सेजावाडा पर शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। जिसमें राजेश व्यास पुलिस अधीक्षक जिला अलीराजपुर के द्वारा आगामी त्योहारों के संबंध में दिए गए निर्देशनुसार हरिशंकर पांटेल चौकी प्रभारी सेजावाडा द्वारा त्यौहार गणेश उत्सव, ढ़ोल ग्यारस, पचायां, नगर रक्षा समिति के सदस्य, चौकीदार गणमान्य नागरिक बंधु उपस्थित हुए।

दो दिन की बारिश में विकास खण्ड में खुली घटिया निर्माण की पोल

दो तालाब फूटे, कई तालाब रहे प्रशासन की रडार पर, पानी निकाल कर फूटने से बचाया

मनरेगा कार्यों की शिकायत पर समय पर ध्यान नहीं देते अधिकारी, फसलों को भारी नुकसान

एसडीएम अनिल कुमार राठौर ने मौके पर पहुचकर ग्रामीणों को हटने की दी हिदायत।

मठमठ में बड़े तालाब में दरार पड़ने के बाद, प्रशासन आया हरकत में।

झावलिया ग्राम पंचायत के रत्यामन में फूटा तालाब, फसले बर्बाद।

माही की गूंज, पेटलावद।

बीते सप्ताह में हुई ही भारी बारिश के कहर से जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। खासकर ग्रामीण ओर निचले इलाको में जहा जल भराव के कारण आम जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ। नदी, नाले, तालाब सभी उफान पर रहे, जिससे कई जिंदगीया खतरे में पड़ गई। नदियों सहित तालाबों के आस-पास बसे रहवासियों के लिए 55 घन्टे भारी दहशत भरे रहे। पेटलावद विकास खण्ड में कई तालाब जो की केंद्र की मनरेगा योजना के माध्यम से अलग-अलग एजेंसियों द्वारा बनाये गए उन पर खतरा मंडराता रहा। दो तालाब फूटने से फसलों को नुकसान हुआ तो कई तालाब प्रशासन की रडार पर रहे और प्रशासनिक अमले की देख-रेख में तालाब से पानी निकाल कर उसे फूटने से बचाया गया, तो कई तालाबों के वेस्टवेयरो बड़ा कर तालाब के पानी की क्षमता कम की गई। विकास खण्ड के प्रशासन का आलम ये रहा है कि, पूरा प्रशासन तालाब-तालाब भागता रहा।

मोईचारणी पंचायत में फूटा 15 लाख का तालाब, 6 माह पूर्व ही बना था तालाब

पेटलावद विकास खण्ड की ग्राम पंचायत मोईचारणी में ग्राम पंचायत द्वारा इस वर्ष बनाया गया तालाब के फुट गया है। यहां ग्राम करनगढ में निस्तार तालाब लिमड़ी वाली नाकी के नाम से लगभग 15 लाख की लागत से बना गया था, तेज बारिश के चलते फुट गया। हालांकि तालाब के पास में कोई रहने वाला नही था और खेत भी कम पड़ते हैं जिससे कोई जन हानि नही हुई। तालाब का निर्माण इस वर्ष गर्मी में मनरेगा योजना में किया गया। तालाब फूटने के बाद इसके लिए ग्राम पंचायत सहित प्रशासन इसे अतिवृष्टि बताएगा तय है, लेकिन इस तालाब को लेकर प्रशासन समय पर हरकत में आ जाता तो आज तालाब सुरक्षित होता।

एसडीएम और जनपद सीईओ को घटिया निर्माण की हुई थी लिखित शिकायत

इस वर्ष अप्रैल-मई माह में बना लिमड़ी वाली नाकी के नाम से लगभग 15 लाख की लागत से बनाया जा रहा था। उक्त तालाब के निर्माण के दौरान भारी भ्रष्टाचार की शिकायत ग्रामीणों ने लिखित में अनुविभागीय अधिकारी राजस्व अनिल कुमार राठौर और जनपद सीईओ पेटलावद राकेश दीक्षित को लिखित में आवेदन देकर की थी। ग्रामीणों ने घटिया कार्य के फोटो तक एसडीएम को व्हाट्सअप के माध्यम से भेज थे। शिकायत के बाद मामला इतना बढ़ गया कि, सरपंच पति ने शिकायत से परेशान पंच के साथ मारपीट और गाली-गलोज तक कर डाली। मामला चौकी पर पहुचा जहां शिकायतकर्ता ने विवाद का कारण तालाब के घटिया निर्माण की शिकायत को वजह बताया। इतनी शिकायत के बाद भी कोई कार्यवाही जबाबदार अधिकारीयो द्वारा नही की गई ओर कमीशन की आड़ में पूरा खेल खेल दिया। जिम्मेदारो ने शायद इस प्रकार की बारिश की उम्मीद नही की होगी और तालाब के घटिया निर्माण को अनदेखा कर दिया। गनीमत रही तालाब फूटने के समय कोई जानवर और चरवाहा इसकी जद में नही आये वरना पशू हानि ओर जन हानि हो सकती थी। जिसके जिम्मेदार आज स्थानीय प्रशासन होता। ग्रामीणों ने बताया कि, समय पर जांच और सुधार हो जाता तो आज तालाब नही फूटता।

उपयंत्री लोकेश सोलंकी सहित अधिकारीयो की लापरवाही से फूटा तालाब

ग्राम पंचायत मोईचारणी के उपसरपंच छगनलाल गामड़ ने बताया कि, तालाब निर्माण के समय हमारे द्वारा कार्य के उपयंत्री लोकेश सोलंकी को समय-समय पर कार्य के फोटो डालकर घटिया निर्माण की जानकारी दी गई, लेकिन उपयंत्री कार्य देंखने तक नही आया। उपसरपंच ने बताया कि, मंत्री व सरपंच की मनमानी और अधिकारियों को की गई शिकायत के बाद भी कोई कार्यवाही नही होने के कारण घटिया निर्माण हुआ और आज तालाब फुट गया, जिसे पानी ज्यादा गिरना बताकर मामला रफा-दफा कर दिया जाएगा। हमारे पास तालाब निर्माण की शिकायत के आवेदन आज भी मौजूद हैं जिस पर समय रहते कोई जांच नही की।

झावलिया पंचायत में फूटा तालाब, मनरेगा में हुए फर्जीवाड़े की पोल खुली

पेटलावद विकास खण्ड में मनरेगा योजना के अंतर्गत हुए तालाब निर्माण में हुई धांधली इस बारिश में सामने आ गई। विकास खण्ड में बने कई नए-पुराने तालाब अलर्ट मोड़ पर है। तालाबों में स्टीमेट के अनुसार क्षमता से भी कम पानी होने के बाद भी लगातार हो रही बारिश के कारण तालाब फूटने की कगार पर है। कई तालाबों के वेस्टवेयर बड़ाकर पानी निकाला जा रहा है जिससे तालाब को फूटने बचाया जा सके। ग्राम पंचायत झावलिया के रल्यावन में बना हटीला वाली नाकी वाला तालाब फूटा गया। जिससे तालाब की जद में आने वाली मक्का, सोयाबीन, कपास की फसल हुई बर्बाद हो गई। बताया जा रहा तालाब चार से पाच साल पुराना था।

बेकलदा-मठमठ में तालाब प्रशासन की रडार पर

कई ग्राम पंचायतों में तालाबो की स्थिति बिगड़ती जा रही थी, एक दिन ओर बारिश नही रुकती तो कई छोटे-बड़े तालाबों के फटने के आसार थे। मठमठ ग्राम पंचायत में भी एक तालाब के फूटने की आशंका के बीच प्रशासन ने मौके पर पहुच कर तालाब के पानी के जद में होने वाली नुकसानी से बचने और ग्रामीणों को विस्थापित करना शुरु कर दिया। ग्राम पंचायत मठमठ के भाजपा नेता बिरज पोरवाल ने अधिकारीयो से मिलकर निचले इलाकों में जाकर ग्रामीणों को सर्तक किया। अनुविभागीय अधिकारी राजस्व अनिल कुमार राठौर ने बताया कि, मठमठ में तालाब चालीस साल से अधिक पुराना है जिसके कुछ समस्या आ रही है सुरक्षा की दृष्टि से टीम वहां मौजूद रहेगी और कुछ परिवारों की शिफ्ट किया। ग्राम पंचायत बेकलदा में आरईएस विभाग द्वारा बना तालाब भी पानी का दबाव नही झेल पाया गनीमत रही, तालाब अचानक फूटने से पहले लीकेज हुआ जिसे समय रहते प्रशासन ने जेसीबी मशीन से वेस्टवेयर खोद साईफर पद्वति से पानी निकाला। इस तालाब के फूटने पर सैकड़ो हेक्टेयर फसल खराब होने की बड़ी सम्भवना थी। बारिश को देखते हुए पूरा प्रशासन अलर्ट मोड़ पर ही रहा।

मनरेगा में हुए घटिया निर्माण पर अतिवृष्टि का चोला डालने का प्रयास किया जा रहा है। तो आरईएस विभाग के अनुसार तालाब में मछली पकड़ने ओर पालने वालो ने वेस्टवेयर में पत्थर भरने से तालाबों पर दबाव पड़ने के कारण ऐसी स्थिति होना बताकर मामले को दबाने का प्रयास करते नजर आये।

बेकलदा तालाब लिकेज होने से फूटने की तैयारी में था, प्रशासन ने मौके पर पहुचकर जेसीबी से वेस्टवेयर खोदा व साईफर पद्वती से पानी भार निकाला।

रूठों को मनाने की चिड़ियां कहां तक बैठा पाएगी भाजपा, क्योंकि टाईगर तो अब भी जिंदा है

समय से काफी पहले प्रत्याशियों की घोषणा, मगर स्थिति अब भी संदेह के घेरे में

माही की गूंज, झाबुआ।

भाजपा ने चुनाव के करीब तीन महीनें पहले ही प्रदेश में कुछ सीटों पर प्रत्याशियों की घोषणा सिर्फ इसलिए कर दी थी कि, बागियों और रूठों को समय रहते मना लिया जाए। यही प्रयास लगातार भाजपा करती भी नजर आ रही है, लेकिन वह इसमें कहां तक कामयाब होगी यह अब भी भविष्य के गर्त में ही है। घोषणा होने के बाद मुख्यमंत्री खुद विधानसभा का दौरा कर कार्यकर्ता सम्मेलन कर चुके है। जिसमें उन्होने घोषित प्रत्याशी को विजयी बनाने के लिए अपील भी की थी। भाजपा की घोषित प्रत्याशियों की पहली सूची के हिसाब से प्रदेश भर में जन आशिर्वाद यात्राएं भी निकाली जा रही है। झाबुआ-आलीराजपुर जिले में भी यह यात्रा पहुंची लेकिन झाबुआ में पहुंचते ही इस यात्रा पर बारिश ने पानी फैर दिया। जिले में भाजपा की जन आशिर्वाद यात्रा लेकर पहुंचे ज्योतिरादित्य सिंधिया ने रूठों को मनाने का भरसक प्रयास किया। लेकिन उन्हे कामयाबी कहां तक मिली इस पर अभी प्रश्न वाचक चिन्ह ही लगा हुआ है। जिले की दूसरी विधानसभाओं में भी स्थिति लगभग एक सी है। जबकि आलीराजपुर जिले की जोबट और झाबुआ जिले की थांदला विधानसभा को प्रत्याशी की घोषणा के लिए अभी होल्ड पर रखा गया है।

यूं तो भाजपा ने आलीराजपुर, झाबुआ और पेटलावद विधानसभाओं में अपने प्रत्याशियों के नाम की घोषणा पहले ही कर दी है, लेकिन इनमें से झाबुआ विधानसभा खासी असमंजस की स्थिति में दिखाई पड़ रही है। जितना विरोध यहा के भाजपा प्रत्याशी को लेकर देखने को मिल रहा है वह झाबुआ-आलीराजपुर जिले की दूसरी किसी विधानसभा में देखने को नहीं मिल रहा है। भाजपा ने झाबुआ विधानसभा सीट पर अपने प्रत्याशी के रूप में भानू भूरिया का नाम तय किया है, लेकिन इस नाम पर विधानसभा में कई तरह के विरोध देखने को मिल रहे है। हालांकि भाजपा जिला संगठन इस तरह के विरोध को सिरे से ही नकारता नजर आ रहा है। मगर यह विरोध है कि, भानू भूरिया के खिलाफ थमने का नाम नहीं ले रहा है। जन आशिर्वाद यात्रा के बाद डेमेज कंट्रोल के लिए बैठक व पिछले दिनों भाजपा की जनआशिर्वाद यात्रा आलीराजपुर जिले से होती हुई झाबुआ में पहुंची। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया इस यात्रा की अगवानी कर रहे थे। झाबुआ जिला मुख्यालय पर जब यात्रा पहुंची तो बस स्टेंड पर होने वाली सभा में बारिश ने पानी फैरना शुरू कर दिया। जैसे-तैसे ज्योतिरादित्य सिंधिया सभा को संबोधित करते हुए निकल गए। सभा के दौरान बारिश होने से सभा में मौजूद लोग इधर-उधर भागते नजर आए। बावजूद इसके सिंधिया ने भानू भूरिया के पक्ष में अपील करते हुए भाजपा को जिताने की बात कही। चूंकि जन आशिर्वाद यात्रा का रात्रि विश्राम झाबुआ में ही था तो दूसरे दिन अगले पड़ाव की ओर कूच करने से पहले केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने रतलाम-झाबुआ-आलीराजपुर संसदीय सीट के सांसद गुमानसिंह डामोर के घर डेमेज कंट्रोल के लिए नाराज भाजपा नेताओं से मुलाकात की। यहां केंद्रीय मंत्री सिंधिया के सामने नाराज भाजपा नेताओं ने अपनी बात भी रखी। इस बैठक में सिंधिया ने स्थानीय नेताओं व संगठन पदाधिकारियों से झाबुआ-आलीराजपुर की पांचों विधानसभाओं की स्थिति का जायजा लिया। इसी दौरान झाबुआ, आलीराजपुर व पेटलावद विधानसभा के उन नेताओं की नाराजगी दूर की गई जिन्हे टिकट नहीं मिला। ये हाल आलीराजपुर, जोबट के इसकी रारू आत आलीराजपुर विधानसभा से की गई। आलीराजपुर के भाजपा प्रत्याशी नागरसिंह चौहान और पूर्व जिलाध्यक्ष वकीलसिंह ठकराला व सूरपाल साकडिया से बात की गई। क्योंकि आलीराजपुर में सौंडवा-छकतला क्षेत्र जीत के लिए बहुत अहम भूमिका निभाता आया है। इस क्षेत्र के कद्दावर नेताओं का यह कहना था कि, स्थानीय कार्यकर्ताओं के बीच मनमुटाव है। आलीराजपुर के कुछ बड़े लोग हमारा हक मार रहे है। हमारे क्षेत्र को मौका नहीं मिल रहा है। इसके बाद जोबट विधानसभा के पूर्व विधायक माधौसिंह डावर व वर्तमान विधायक सुलोचना रावत के पुत्र विशाल रावत भी यहां पहुंचे। सभी से सिंधिया ने अपील की कि, इस बार का विधानसभाचुनाव महत्वपूर्ण है। कर्नाटक के रिजल्ट से कांग्रेस जिंदा हो गई है। इसलिए हमारी जिम्मेदारी है कि, टिकट किसी को भी मिले, इस बात से नाराज ना होकर पार्टी को जिताना है। सब नाराजगी भूलो और काम में जुट जाओ।

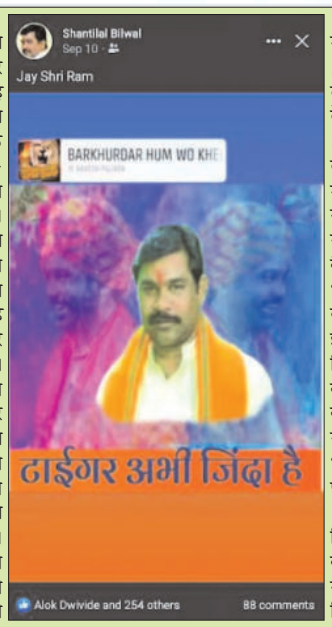

झाबुआ में बगावती सुर

झाबुआ विधानसभा का नंबर आया तो प्रत्याशी भानू भूरिया, पूर्व विधायक शांतिलाल बिलवाल, पूर्व जिलाध्यक्ष शैलेष दुबे व मनोहर सेठिया को बुलाया गया। उन्हे भी चुनाव में जुट जाने की अपील की गई। मगर पूर्व विधायक शांतिलाल बिलवाल ने प्रत्याशी भानु भूरिया पर शराब माफिया होने व पुलिस की दलाली करने का आरोप लगाया। बिलवाल ने बताया कि मैं, 2013 में 56 हजार वोटों से जीता था। इसके बावजूद 2018 में मेरा टिकट काट दिया गया। फिर 2020 में जब उपचुनाव हुआ तो मेरा टिकट काट कर भानू को दे दिया गया। भानू 27 हजार 804 वोटों से हारा। पुलिस की दलाली करने वाला और शराब माफिया भानू चुनाव कैसे जीत सकता है...? वो अपनी पंचायत नहीं जीत पाया तो विधानसभा कैसे जीतेगा...? हालांकि भानू भूरिया ने इन आरोपों को गलत बताया और शांतिलाल की कही इस बात को ही सीरे से नकार दिया कि, माफिया और पुलिस की दलाली वाली बात मंत्री जी के सामने नहीं हुई। मंत्री सिंधिया ने सभी को समझाईश दी है कि, भाजपा को ही जीताना है। पार्टी पूरा ख्याल रखेगी।

इसके बाद थांदला विधानसभा के पूर्व विधायक कलसिंह भाबर, प्रदेश मंत्री संगीता सोनी, पेटलावद की पूर्व विधायक व भाजपा प्रत्याशी निर्मला भूरिया से भी मंत्री सिंधिया ने मुलाकात की। बैठक के बाद बारी-बारी से नेता व जनप्रतिनिधि बाहर आते जा रहे थे और जल संसाधन मंत्री तुलसी सिलावट व जयपालसिंह चावड़ा सभी को समझा रहे थे कि, पार्टी उनका पूरा ख्याल रखेगी वे बिल्कुल भी फिक्र ना करें।

टाईगर जिंदा था, जिंदा है और जिंदा रहेगा

इस पूरे घटनाक्रम में अंदर की खबर रखने वाले बताते है कि, जब झाबुआ विधानसभा को लेकर चर्चा चल रही थी तो शांतिलाल बिलवाल इस बात पर अड़े रहे कि, मैं तो चुनाव लड़ूंगा। हालांकि पहले भी उन्हे पार्टी के उच्च पद का लालीपॉप दिया गया था, लेकिन वे नहीं माने और मुखर होकर चुनावी रण में उतरने की बात करते रहे। इस बात का प्रमाण यह भी है कि, अगस्त में मुख्यमंत्री की सभा के बाद यह अंदाजा लगाया जा रहा था कि, अगले जिलाध्यक्ष के रूप में शांतिलाल हो सकते है। सोशल मीडिया पर इस बात की सुगबुगाहट भी देखने को मिली थी, लेकिन 28 अगस्त को सोशल मीडिया पर शांतिलाल बिलवाल ने एक पोस्ट करते हुए यह लिखा कि, ''मुझे भाजपा जिलाध्यक्ष मनोनित किए जाने की सिर्फ अफवाह है, बात निराधार है''। हालांकि बिलवाल ने इस पोस्ट में चुनाव लडने को लेकर कोई पुष्टी नहीं की। मगर इसी 28 अगस्त की एक और पोस्ट में अपने फोटो के साथ यह लिखा कि, ''टाईगर अभी जिंदा है''। सोशल मीडिया पर उनकी ऐसी कई पोष्ट जारी हुई है जिसने कई तरह की शंकाएं पैदा कर दी है। बिलवाल की फेसबुक वाल से 10 सितम्बर को भी एक फेसबुक रिल्स् पोस्ट की गई जिसमें जय श्रीराम के साथ यह टाईटल था ''टाइगर अभी जिंदा है''। रिल्स् पर अपलोड किए गए ऑडियो के बोल कुछ ऐसे थे कि, ''हमें खामौश देखकर यह मत समझना कि हम खामौश है, हवा जब खामौश होती है तो उसे देखकर यह पता नहीं लगता कि यह खामौश हवा कब तूफान बन जाएगी। ''बिलवाल की इस तरह की फेसबुक रिल्स् पर कई ऐसे कमेंट आए जिसमें लिखा था ''हम आपके साथ है। आप तो फार्म भरो बस। निर्दलीय जीत कर दिखा देंगे। टाइगर जिंदा था, जिंदा है, और जिंदा रहेगा।'' सोशल मीडिया पर बिलवाल की इस तरह की पोस्ट कई तरह के इशारे कर रही है।

रही बात भानू पर लगाए गए आरोपों की तो यह कोई पहला मौका नहीं है जब भानू पर आरोप लगे है। वैसे भी भानू हमेशा से ही सप्लायरों और माफियाओं से घिरे रहते है। कई बार अखबारों की सुर्खियों में भी रहे है।

अब आरोप तो आरोप होते है यह कभी गोण नहीं होते। अब भाजपा रूठों को मनाने में किस तरह की चिडियां कहां तक बैठा पाएगी यह तो समय के गर्त में है। समय से काफी पहले प्रत्याशियों की घोषणा तो सिर्फ इसलिए हुई थी कि, रूठों को मना लिया जाए, लेकिन स्थितियां अब तक संदेह के घेरे में ही नजर आ रही है। क्योंकि टाईगर अभी जिंदा है।

कांग्रेस छोड़ भाजपा में सम्मिलित हुए ग्रामीण

मंडल व पूर्व मंडलअध्यक्ष के साथ क्षेत्र के अन्य भाजपा नेता की अनुउपस्थिति बन रही चर्चा का विषय

माही की गूंज खवासा/ भामल।

जैसे ही विधानसभा चुनाव नजदीक आ रहे हैं वैसे ही नेता अपनी उम्मीदवारी के साथ अपने वर्चस्व को ऊपरी स्तर पर कायम रखने के लिए कई राजनितिक पैतरे चला । वही राजनीतिक गलियारों में उठापटक के साथ ही अपनी ही पार्टी में ही गुट बाजी भी सार्वजानिक नजर आ रही है। इसी कड़ी में कई नेता अपनी पार्टी से अदला -बदली का दौर भी जमकर चल रहा हैं। ऐसे में अपनी-अपनी पार्टी के नेता अपनी बजबूती, भोपाली संगठन स्तर पर दिखाने के लिए अन्य पार्टी के नेता व कार्यकर्ताओ को बड़ी संख्या में अपनी पार्टी में लाने का कार्य कर अपने आप को दूसरों से ज्यादा अपने को मजबूत साबित करने का प्रयास कर रहे हैं।

कुछ इसी तर्ज पर भाजपा अजजा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष व एक बार भाजपा व एक बार निर्दलीय विधायक रहे कलसिंह भाभर थांदला विधानसभा से अपनी मजबुत दावेदारी पेश कर रहे हैं। वही

अन्य दावेदारो से उनकी क्षेत्र में मजबूत स्थति हैं ऐसा भोपाली स्तर पर साबित करने में भी वे पीछे नहीं है। जिसके साथ भाजपा की स्थानीय गुट बाजी भी सार्वजनिक रूप से सामने आ रही है। जिसका एक उदाहर मंगलवार को भी खवासा क्षेत्र में सामने आया है। खवासा मंडल के ग्राम पंचायत भामल के रूपापाड़ा फलिया में मंगलवार को एक दर्जन से अधिक ग्रामीणों ने कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुए। अजजा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष कलसिंह भाभर द्वारा उनको बीजेपी का गमछा डालकर कांग्रेस छोड़कर भाजपा में सम्मिलित किया गया। बताते हैं ग्राम पंचायत भामल में रूपापाड़ा फलिया हमेशा कांग्रेस के समर्थन में रहा है और आज इस फलिये में एक दर्जन से अधिक ग्रामीण भाजपा में सम्मिलित हुए जिसे कहीं ना कहीं कांग्रेस को एक बड़ा झटका लग रहा है। इस अवसर पर भाजपा के कैलाश नकुम, केशव सोलंकी, मंडल महामंत्री कमल चावड़ा, भारत खेर देवीसिंह देवदा, आदि कार्यकर्ता उपस्थित थे, लेकिन खवासा मंडल मंडल अध्यक्ष तोलसिंग गणावा, पूर्व खवासा मंडल अध्यक्ष व थांदला विधानसभा के प्रबल दावेदार रमेश बारिया के साथ कई क्षेत्र के बड़े नेता उपस्थित नहीं थे। जिसके चलते भाजपा की स्थानीय गुट बाजी नजर आ कर चर्चा का विषय क्षेत्र में बना हुआ है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422